



આશિકે અકબર

(સીરતે સિદ્દિકે અકબર કે ચન્દ ગોશે)

AASHIQE AKBAR (GUJARATI)



- જી બચપન કી હેરત અંગેઝ હિકાયત 2
- જી હઝરતે અબુ બક સિદ્દિક કા મુખત્તર તબાહ 3
- જી સબ સે પહલે કીન ઈમાન લાયા ? 5
- જી સિદ્દિકે અકબર કી માન ઔર કુરઆન 17
- જી સિદ્દિકે અકબર ને મન્દની ઓપરેશન કરમાયા 57
- જી ગુલ્લા ઔર તર કે ખાલો વગેરે કે 22 મન્દની ફલ 60
- જી મન્કબતે સબ્બિહુના સિદ્દિકે અકબર 64

مکتبۃ المدینہ
(مکتبۃ اسلامی)

કોને તરીકત, કમીરે કહલે સુખત, કાલિલે દા'વતે હવાલો, હઝરત હાવાન મોહલત અબુ હિલાલ

મુહમ્મદ ઈબ્રાહમ અલ્લાહ કારિદારી ૨-૩૦વી ૧૪૩૯

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 - أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ -

आशिडे अकबर¹

शैतान लाप सुस्ती दिलाअे येह रिसाला (64 सङ्घात)
 अव्वल ता आभिर पढ लीजिये. إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ. सवाब व मा'लूमात
 के साथ साथ दौलते ईशक का ढेरों ढेर भजाना हाथ आअेगा.

दुइटे पाक की इजीलत

हर कतरे से इरिश्ता पैदा होता है

मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमियान, सरवरे जीशान
 عَزَّوَجَلَّ का इरमाने अ-र-कत निशान है : अद्लाह
 का अक इरिश्ता है के उस का बाजू मशरिक में है और दूसरा
 मगरिब में. जब कोई शप्स मुज पर महब्बत के साथ दुइटे भेजता
 है वोह इरिश्ता पानी में गोता भा कर अपने पर जाउता है,
 अद्लाह उस के परो से टपकने वाले हर हर कतरे से अक अक
 इरिश्ता पैदा करता है वोह इरिश्ते कियामत तक उस दुइटे पढने
 वाले के लिये इस्तिफ़ार करते हें.

(الْقَوْلُ الْبَدِيعِ ص २०१، الكلام الاوضح فى تفسير الم نشرح، ص २४२، २४३)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْكَيْبِ!

1 : येह भयान अभीरे अहले सुन्नत सल्लल्लैहि वसल्लै वसल्लै ने तबलीगे कुरआनो सुन्नत की
 आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते ईस्लामी के अव्वलीन म-दनी मर्कज जामेअ
 मस्जिद गुलजारे हबीब में डोने वाले हइतावार सुन्नतों भरे ईजतिमाअ (अन्दाजन 3 2-
 मजानुल मुबारक सि. 1410 हि./29-03-90) में इरमाया था. तरमीम व ईजाफे के साथ
 तहरीरन हाजिरे भिदमत है.

मजलिसे मक-त-भतुल मदीना

करमाने मुस्तफ़ा : عَزَّوَجَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुरदे पाक पढा अदलाह उस पर दस रकमतें भेजता है. (स्)

बयपन की हैरत अंगेज डिकायत

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 561 सईहात पर मुश्तमिल किताब, "मल्कूआते आ'ला इज्जरत (4 हिस्से)" सईहा 60 ता 61 पर है : सिदीके अकबर رضى الله تعالى عنه ने कभी भुत को सजदा न किया. यन्द् बरस की उम्र में आप (رضى الله تعالى عنه) के बाप भुतपाने में ले गये और कहा : येह हैं तुम्हारे बुलन्दो बाला भुदा, ईन्हें सजदा करो. जब आप (رضى الله تعالى عنه) भुत के सामने तशरीफ़ ले गये, इरमाया : "मैंं लूका हूं मुजे पाना दे, मैंं नंगा हूं मुजे कपडा दे, मैंं पथ्थर मारता हूं अगर तू भुदा है तो अपने आप को बया." वोह भुत भला क्या जवाब देता. आप (رضى الله تعالى عنه) ने ओक पथ्थर उस के मारा जिस के लगते ही वोह गिर पडा और कुव्वते भुदादाह की ताब न ला सका. बाप ने येह डालत देपी उन्हे गुस्सा आया, उन्हों ने ओक थप्पड रुपसारे मुबारक पर मारा, और वहां से आप (رضى الله تعالى عنه) की मां के पास लाये, सारा वाकिआ बयान किया. मां ने कहा : ईसे ईस के डाल पर छोड दो जब येह पैदा हुवा था तो गैब से आवाज आई थी के

يَا أُمَّةَ اللَّهِ عَلَى التَّحْقِيقِ

أَبْشِرِي بِالْوَلَدِ الْعَتِيقِ اسْمُهُ

فِي السَّمَاءِ الصِّدِّيقِ لِمَحَمَّدٍ

صَاحِبِ وَرَفِيقِ

औ अदलाह (عَزَّوَجَلَّ) की सख्खी बन्दी ! तुजे भुश भबरी डो येह बख्या अतीक है, आस्मानों में ईस का नाम सिदीक है, मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का साहिब और रफ़ीक है.

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जो शास्त्र मुज़ पर दुइटे पाक पढना भूल गया वोड जन्त का रास्ता भूल गया. (ज़रू)।

येह रिवायत सिदीके अकबर (رضی اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ने भुद मजलिसे अकदस (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ) में बयान की. जब येह बयान कर चुके, जिब्रीले अमीन (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) हाज़िरे बारगाड हुअे और अर्ज़ की :

اَبُو بَكْرٍ نَعَى كَذَا وَاوْرَ وَاوْرَ
صَدَقَ اَبُو بَكْرٍ وَهُوَ الصِّدِّيقُ
सिदीक हें.

येह उदीस एमाम अहमद कस्तलानी (قَدَسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي) ने शर्हे सहीह बुभारी में लिंक की.

(ارشاد الساری شرح صحیح بخاری ج ۸ ص ۳۷۰، ملفوظات اعلیٰ حضرت ص ۶۰، ۶۱، بَتَّصْرُف)

सय्यिदुना सिदीके अकबर का मुप्तसर तआरुइ

बलीइअे अव्वल, ज़ा नशीने महुबूबे रउबे कदीर, अमीरुल मुअमिनीन उज़रते सय्यिदुना सिदीके अकबर (رضی اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) का नामे नामी एस्मे गिरामी अहुदुल्लाह आप (رضی اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) की कुन्यत अभू भक और सिदीक व अतीक आप (رضی اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) के अल्काब हें. **سُبْحٰنَ اللّٰهِ! सिदीक का मा'ना है :** “अहुत जियादा सय बोलने वाला.” आप (رضی اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ज़मानअे ज़ाहिलियत ही में एस लकब से मुलक्कब हो गअे थे क्यूंके उमेशा ही सय बोलते थे और अतीक का मा'ना है : “आजाद.” सरकारे आली मर्तबत (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ) ने आप (رضی اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) को बिशारत देते हुअे इरमाया : “**اَنْتَ عَتِيقٌ مِّنَ النَّارِ** : तू नारे दोजभ से आजाद है.” एस लिये आप (رضی اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) का येह लकब हुवा. (تَارِيْحُ الخُلَفَاءِ ص ۲۹) आप (رضی اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) कुरैशी हें और सातवीं

करमाने मुस्तक। صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरद्वे पाक न पढा तबकीक वोह बदमन्त हो गया. (अहमद)

पुश्त में श-ज-रअे नसब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पानदानी श-जरे से मिल जाता है. आप رضى الله تعالى عنه आमुल झील¹ के तकरीबन अढाई बरस बा'द मक्कतुल मुकर्रमा زَادَ اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में पैदा हुआ. अभीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना सिदीके अकबर رضى الله تعالى عنه वोह सलाबी हैं जिन्हों ने सब से पहले ताजदारे रिसालत, शह-शाहे नुबुव्वत, मफ्जने जूदो सभापत رضى الله تعالى عنه की रिसालत की तस्दीक की. आप رضى الله تعالى عنه इस कदर जामिउल कमालात और मजमउल इजाईल हैं के अम्बियाअे किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के बा'द अगले और पिछले तमाम ईन्सानों में सब से अइजलो आ'ला हैं. आजाद मर्दों में सब से पहले ईस्लाम कबूल किया और तमाम जिहादों में मुजा-हदाना कारनामों के साथ शरीक हुआ और सुल्ह व जंग के तमाम कैसलों में महबूबे रब्बे कदीर, साहिबे ખैरे कसीर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के वजीर व मुशीर बन कर, जिन्दगी के हर मोड पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का साथ दे कर जां निसारी व वझादारी का हक अदा किया. 2 साल 7 माह मस्नदे खिलाईत पर रौनक अइरोज रह कर 22 जुमादल उभरा सि. 13 हि. पीर शरीफ का दिन गुजार कर वझात पाई. अभीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना उमर رضى الله تعالى عنه ने नमाजे जनाजा पढाई और रौजअे मुनव्वरह زَادَ اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में हुजूरे अकदसे صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पहलूअे मुकदस में दइन हुआ.

(الاکمال فی اسماء الرجال ص ۳۸۷، تاریخ الخلفاء ص ۲۷-۲۲ باب المدینه کراچی)

1 : या'नी जिस साल ना मुराद व ना हज्जर अब-रहा बादशाह हाथियों के लश्कर के हमराह का'बअे मुशर्रफा पर हम्ला आवर हुआ था. इस वाकिये की तफसील जानने के लिये मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ किताब "अजाईबुल कुरआन मअ गराईबुल कुरआन" का मुता-लआ कीजिये.

करमाने मुस्तफ़ा : طي الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुब्द और दस मरतबा शाम दुर्दे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शकात मिलेगी. (عنه)

सब से पहले कौन ईमान लाया ?

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 92 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “सवानेडे करबला” सफ़हा 37 पर है : अगर्ये सहाबअे किराम व ताबिईन वगैरहुम की कसीर जमाअतो ने ईस पर जोर दिया है के “सिद्दीके अकबर” सब से पहले मोमिन हैं. मगर बा'ज हजरात ने येह बी इरमाया के सब से पहले मोमिन “हजरते अली” हैं. बा'ज ने येह कहा के “हजरते ખદીજા” رضى الله تعالى عنه, सब से पहले ईमान से मुशर्रफ़ हुई. ईन अक्वाल में हजरते ईमामे आली मकाम, ईमामुल अईम्मा, सिराजुल उम्मा, हजरते ईमामे आ'जम अबू हनीफ़ा رضى الله تعالى عنه ने ईस तरह तल्बीक (या'नी मुवा-इकत) दी है के मदी में सब से पहले हजरते अबू बक मुशर्रफ़ व ईमान हुअे और औरतो में हजरते उम्मुल मुअमिनीन खदीजा और नौ उम्र साहिब जादों में हजरते अली. رضى الله تعالى عنهم أجمعين

(تاريخ الخلفاء للسيوطي ص ٢٦)

सब से अइजल कौन ?

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 92 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “सवानेडे करबला” सफ़हा 38 ता 39 पर है : अहले सुन्नत का ईस पर ईजमाअ है के अम्बिया عَلَيْهِم الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के बा'द तमाम आलम से अइजल हजरते अबू बक सिद्दीक رضى الله تعالى عنه हैं, उन के बा'द हजरते उमर, उन के बा'द हजरते उस्मान, उन के बा'द हजरते अली, उन के बा'द तमाम अ-श-रअे मुबशशरह, उन के बा'द बाकी अहले बद्र, उन के बा'द बाकी अहले उहुद, उन के बा'द

ફરમાને મુસ્તકા : حلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुःख शरीफ न पड़ा उस ने जका की. (Jizyah)

બાકી અહલે બૈઅતે રિઝવાન, ફિર તમામ સહાબા. યેહ ઈજમાઅ અબૂ મન્સૂર બગદાદી حَدَّثَنَا اللهُ رَحْمَةً عَلَيْهِ وَرَحْمَةً اللهُ الْقَادِرُ نے نکલ ક્રિયા હૈ. ઈબ્ને અસાકિર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا سے रिवायत की, ફરમાયા કે હમ અબૂ બક્ર વ ઉમર વ ઉસ્માન વ અલી કો ફઝીલત દેતો થો બહાલે કે સરવરે આલમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ હમ મેં તશરીફ ફરમા હૈં. (ઈબ્ને અસાકિર, જિ. 30, સ. 346) ઈમામ અહમદ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِدُ ने उतरते अली मुर्तजा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى وَحَقَّهُ الْكَرِيمُ سے रिवायत किये के आप ने इस् उम्मत में नबी عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ के बाद सब से बेहतर अबू बक़्र व उमर हूँ. (औज़ान, स. 351) ઝહબી رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कहा के येह उतरते अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से બ તવાતુર મન્કૂલ હૈ. (تَارِيخُ الْخُلَفَاءِ لِلْسُّيُوطِيِّ ص ٣٤)

તો મૈં ઈલ્લામ તરાશોં વાલી સઝા દૂંગા

ઈબ્ને અસાકિર (عليه رَحْمَةُ اللهُ الْقَادِرُ) ને અબ્દુરહમાન બિન અબી લૈલા (رَحْمَةُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ) સે રિવાયત કી કે હઝરતે અલી મુર્તજા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى وَحَقَّهُ الْكَرِيمُ ને ફરમાયા : જો મુઝે હઝરતે અબૂ બક્ર વ ઉમર સે અફઝલ કહેગા તો મૈં ઉસ કો મુફતરી કી (યા'ની ઈલ્લામ લગાને વાલે કો દી જાને વાલી) સઝા દૂંગા.

(تاريخ دمشق لابن عساكر ج ٣٠ ص ٣٨٣ دار الفكر بيروت)

કલામે હસન

બરાદરે આ'લા હઝરત, ઉસ્તાઝે ઝમન, હઝરતે મૌલાના હસન રઝા ખાન رَحْمَةُ اللهِ الْوَمَانُ अपने मजमूअअे कलाम “जौके ना'त” में अफ्दलुल બ-શરે બા'દલ અમ્બિયા, મહબૂબે હબીબે

करमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुठ पर रोजे जुमुआ दुइद शरीक पड़ेगा में क्रियामत के दिन उस की शक्राअत करूंगा।
(क़ुरआन)

पुढा, साहिबे सिदक़ो सफ़ा, उठरते सय्यिदुना अबू बक़ सिदीक़ बिन
अबू कुहाफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की शाने सदाक़त निशान में यूं रत्नबुल्लिसान
हैं :

बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिदीके अकबर का है यारे गार, मडबूबे पुढा सिदीके अकबर का
धलाही ! रड्म इरमा ! भादिमे सिदीके अकबर हूँ तेरी रडमत के सहके, वासिता सिदीके अकबर का
रसुल और अम्बिया के भा'द जो अक़जल हो आलम से येह आलम में है किस का मर्तबा, सिदीके अकबर का
गदा सिदीके अकबर का, पुढा से इज़ल पाता है पुढा के इज़ल से हूँ मैं गदा, सिदीके अकबर का
जईकी में येह कुव्वत है जईकीं को कवी कर दें सधारा लें जईकी अक़िवया सिदीके अकबर का
हुअे इरुको उस्मानो अली ज़ब दामिले बैअत बना इध्रे सलासिल सिद्विसला सिदीके अकबर का
मकामे प्वाबे राडत यैन से आराम करने को बना पडलूअे मडबूबे पुढा सिदीके अकबर का
अली हें उस के दुश्मन और वोह दुश्मन अली का है जो दुश्मन अक़ल का दुश्मन हुवा सिदीके अकबर का

लुटाय़ा राडे डक में घर कथि बार धस मडबूबत से

के लुट लुट कर डसन घर बन गया सिदीके अकबर का

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

माल व ज़ान आकाअे दौ ज़डां पर कुरबान

साहिबे मरवियाते कसीरा उठरते सय्यिदुना अबू हुरैरा

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है के रडमते आ-लमियान, मक्की म-दनी

सुल्तान, मडबूबे रडमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने डकीक़त

करमाने मुस्तका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तखारत है. (अबुयूसुफ़)

निशान है : “ या'नी मुजे कभी किसी के माल ने वोह झांभेदा न दिया जो अबू अक़ के माल ने दिया.” बारगाहे नुबुव्वत से येह बिशारत सुन कर हजरते सय्यिदुना अबू अक़ (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) रो दिये और अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मेरे और मेरे माल के मालिक आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ही तो हैं.

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ۱ ص ۷۲ حدیث ۹۴ دارالمعرفۃ بیروت)

वोही आंभ उन का जो मुंड तक, वोही लभ के मध्व छों ना'त के
वोही सर जो उन के लिये जुके, वोही दिल जो उन पे निसार है

(हदाईके अषिाश शरीफ)

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْرُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

भीठे भीठे ईस्लामी लाईयो ! ईस रिवायते मुभा-रका से मा'लूम हुवा के हजरते सय्यिदुना सिदीके अकबर رضي الله تعالى عنه का मुभारक अकीदा भी येही था के हम महुबूबे रब्बुल अनाम का गुलाम हैं और गुलाम के तमाम माल व मनाल का मालिक उस का आका ही होता है, हम गुलामों का तो अपना है ही क्या ?

क्या पोश करें जनां क्या चीज हमारी है

येह दिल भी तुम्हारा है येह जं भी तुम्हारी है

कड़ं तेरे नाम पे जं झिंदा

ईब्रिदाअे ईस्लाम में जो शप्स मुसल्मान होता वोह अपने ईस्लाम को हत्तल वस्अ (जहां तक मुम्किन होता) मफ्ई रभता के हुजुरे अकरम, नूरे मुजरसम, गम प्वारे उमम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुइद पढो के तुम्हारा दुइद मुज तक पछोयता है. (لمرأ)

की तरफ़ से भी येही हुकूम था ताके काफ़िरों की तरफ़ से पछोयने वाली तकलीफ़ और नुकसान से मइफूज़ रहें. जब मुसल्मान मर्दों की ता'दाद 38 हो गई तो हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर رضى الله تعالى عنه ने भारगाहे रसूले अन्वर صلى الله تعالى عليه وآله وسلم में अर्ज़ की : या रसूलदलाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ! अब अलल अे'लान तब्लीगे ईस्लाम की ईजाज़त ईनायत इरमा दीजिये. दो आलम के मालिको मुप्तार, शकीअे रोजे शुमार, उम्मत के गम ख्वार صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने अक्वलन ईन्कार इरमाया मगर इर आप رضى الله تعالى عنه के ईस्रार पर ईजाज़त ईनायत इरमा दी. युनान्ये सभ मुसल्मानों को ले कर मस्जिदुल हुराम शरीफ़ إِذَا هَا اللَّهُ شَرَفًاوُ تَعْظِيمًا में तशरीफ़ ले गअे और ખતીબे अक्वल हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर رضى الله تعالى عنه ने ખुत्बे का आगाज़ किया, ख़ुत्बा शुइअ होते ही कुइइर व मुश्रिकीन यारों तरफ़ से मुसल्मानों पर टूट पडे. मक्कअे मुकर्रमा إِذَا هَا اللَّهُ شَرَفًاوُ تَعْظِيمًا में आप رضى الله تعالى عنه की अ-ज-मतो शराइत मुसद्लम थी, ईस के बा वुजूद कुइइरारे भद अत्वार ने आप رضى الله تعالى عنه पर भी ईस कदर खूनी वार किये के येइरअे मुभारक लहू लुहान हो गया हत्ता के आप رضى الله تعالى عنه बेहोश हो गअे. जब आप رضى الله تعالى عنه के कभीले के लोगों को ખबर हुई तो वोह आप رضى الله تعالى عنه को वहां से उठा कर लाअे. लोगों ने गुमान किया के हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर رضى الله تعالى عنه जिन्दा न भय सकेंगे. शाम को जब आप رضى الله تعالى عنه को ईईका हुवा और होश में आअे तो सभ से पहले येह अइफ़ाज़ जभाने सदाकत निशान पर ज़री हुअे : मइबूबे रब्बे जुल जलाल صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का क्या हाल है ? लोगों की

करमाने मुस्तफ़ी صلى الله تعالى عليه وآله وسلم जिस ने मुज पर दस मर्तबा दुरदे पाक पढा अल्लाह عز وجل पर सो रहमतें नाजिल करमाया (ज़रान)

तरफ़ से ँस पर अहुत मलामत हुँ के उन का साथ देने की वजह से ही येह मुसीबत आँ, फिर भी उन्ही का नाम ले रहे हो.

आप رضى الله تعالى عنه की वालिदअे माजिदा उम्मुल भैर भाना ले आँ मगर आप رضى الله تعالى عنه की अेक ही सदा थी के शाहे भुश भिसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का क्या डाल है? वालिदअे मोहतरमा ने ला ँल्मी का ँजहार किया तो आप رضى الله تعالى عنه ने फ़रमाया : उम्मे जमील رضى الله تعالى عنها (हज़रते सय्यिदुना उमर رضى الله تعالى عنه की अहन) से दरयाफ़त कीजिये, आप رضى الله تعالى عنه की वालिदअे माजिदा अपने लभ्ते जिगर की ँस मजलूमाना डालत में की गँ

बे ताभाना दर-भ्वास्त पूरी करने के लिये हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे जमील رضى الله تعالى عنها के पास गँ और सरवरे मा'सूम صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का डाल मा'लूम किया. वोह भी ना मुसाँह डालात के सबभ उस वक्त अपना ँस्लाम छुपाअे हुअे थीं और यूँके उम्मुल भैर अभी तक मुसल्मान न हुँ थीं लिहाजा अनजान बनते हुअे फ़रमाने लगीं : मैं क्या जानूँ कौन मुहम्मद رضى الله تعالى عنه और कौन अबू अक (رضى الله تعالى عنه). हां आप के भेटे की डालत सुन कर रन्ज हुवा, अगर आप कहें तो मैं यल कर उन की डालत देभ लूँ. उम्मुल भैर आप رضى الله تعالى عنها को अपने घर ले आँ. उन्हां ने जब हज़रते सय्यिदुना सिदीके अकबर رضى الله تعالى عنه की डालते जार देभी तो तहम्मूल (या'नी अरदाशत) न कर सकीं, रोना शुरुअ कर दिया. हज़रते सय्यिदुना सिदीके अकबर رضى الله تعالى عنه ने पूँया : मेरे आका صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की भैर अबर दीजिये. हज़रते सय्यि-दतुना

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पड़े तो वोह लोगों में से
 (تبرکات) है। (क़ुरआन शरीफ़)

उम्मे जमील رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने वालिदअे साहिबा की तरफ़ ईशारा करते हुअे तवज्जोह दिलाई. आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरमाया के इन से भौंफ़ न कीजिये, तब उन्हों ने अर्ज की : नबिय्ये रहमत सल्लै अल्लाह त्ताली एलैह व्वाले व्वास्लै की ईनायत से भभैरो आइय्यत हैं और दारे अरकम या'नी उअरते सय्यिदुना अरकम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के घर तशरीफ़ इरमा हैं. आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरमाया : भुदा क़ुअल की कसम ! मैं उस वक्त तक कोई चीज भाउंगी न पियूंगा, जब तक शह-शाहे नुबुव्वत, सरापा भैरो ब-र-कत सल्लै अल्लाह त्ताली एलैह व्वाले व्वास्लै की जियारत की सआदत हासिल न कर लूं. युनान्ये वालिदअे माजिदा रात के आभिरी हिस्से में आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को ले कर हुजूर ताजदारे रिसालत सल्लै अल्लाह त्ताली एलैह व्वाले व्वास्लै की भिदमते बा ब-र-कत में दारे अरकम हाजिर हुई. आशिके अकबर उअरते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हुजूरे अन्वर सल्लै अल्लाह त्ताली एलैह व्वाले व्वास्लै से लिपट कर रोने लगे, आकाअे गम गुसार सल्लै अल्लाह त्ताली एलैह व्वाले व्वास्लै और वहां मौजूद दीगर मुसल्मानों पर भी गिर्या (या'नी रोना) तारी हो गया के सय्यिदुना सिद्दीके अकबर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की हालते जार देषी न जाती थी. फिर आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्मे बजमे हिदायत सल्लै अल्लाह त्ताली एलैह व्वाले व्वास्लै से अर्ज की : येह मेरी वालिदअे माजिदा हैं, आप सल्लै अल्लाह त्ताली एलैह व्वाले व्वास्लै इन के लिये हिदायत की दुआ कीजिये और एन्हें दा'वते ईस्लाम दीजिये. शाहे भैरुल अनाम اَفْضَلُ الصَّلَوةِ وَالسَّلَامِ ने उन को ईस्लाम की दा'वत दी, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! वोह उसी वक्त मुसल्मान हो गईं.

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुवदे पाक न पड़े. (मा)

जिसे मिल गया गमे मुस्तफ़ा, उसे जिन्दगी का मजा मिला
कभी सैले अशक रवां हुवा, कभी “आह” दिल् में दभी रही

(वसाएले बप्शिश)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

राहे फुदा में मुश्किलात पर सभ्र

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! दीने इस्लाम की इशाअत

व तरवीज के लिये किस कदर मसाईब व आलाम भरदाशत किये गये, इस्लाम के अजीम मुबल्लिगीन ने तन मन धन सभ राहे फुदा में कुरबान कर दिया ! आज भी अगर म-दनी काईले में सफ़र पर जाते, इन्फ़िरादी कोशिश इरमाते, सुन्नतें सीषते सिषाते या सुन्नतों पर अमल करते कराते हुये अगर मुश्किलात का सामना हो तो हमें आशिडे अकबर सय्यिदुना सिदीके अकबर رضي الله تعالى عنه के डालात व वाकिआत को पेशे नजर रष कर अपने लिये तसल्ली का सामान मुहय्या कर के म-दनी काम मजीद तेज कर देना याहिये और दीन के लिये तन मन धन निसार कर देने का जजबा अपने अन्दर उजागर करना याहिये जैसा के आशिडे अकबर رضي الله تعالى عنه आभिरी दम तक इप्लास और इस्तिकामत के साथ दीने इस्लाम की बिदमत सर अन्जाम देते रहे, राहे फुदा में जान की बाजी लगा दी मगर पाये इस्तिकलाल में जर्दा बराबर भी लज्जिश न आई, दीने इस्लाम कबूल करने की पादाश में जो सहाबये किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ मजलूमाना जिन्दगी बसर कर रहे थे आप رضي الله تعالى عنه ने उन के लिये रहमत व शफ़कत के दरिया बहा दिये. और बारगाहे रब्बुल उला عَزَّوَجَلَّ से आप رضي الله تعالى عنه ने साहिबे तकवा का लकब पाया और बिदमते

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे ज़मुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ि (क़रामत) देवे।

दीने जुदा और उल्फते मुस्तफ़ा में माल खर्च करने पर सुल्ताने दो ज़हान, रहमते आ-लमियान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने भी आप رضی اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की ता'रीफ़ व तौसीफ़ बयान इरमाई।

सात गुलाम खरीद कर आजाद किये

“इतावा र-जविय्या” जिल्द 28 सफ़हा 509 पर है : अमीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना अबू बक़ सिदीक رضی اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने 7 (गुलामों को खरीद कर उन) को आजाद किया, इन सब (गुलामों) पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जुल्म तोडा जाता था और इन्हीं (सिद्दीके अकबर) के लिये येह आयत उतरती :

وَسَيَجْزِيهَا إِلَّا تُتَى ۝

(پ ۳۰، اللیل: ۱۷)

तर-ज-मअे क-जुल ईमान : और बहुत उस (दोज़ा) से दूर रखा जायेगा जो सब से बडा परेहज गार.

सफ़हा 512 पर ईमाम इफ़रदीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِي के हवाले से है : हम सुन्नियों के मुफ़सिसरीन का ईस पर ईजमाअ है के “अत्तय़ी” से मुराद उजरते (सय्यिदुना) अबू बक़ हैं. (इतावा र-जविय्या)

कररे पाके भिलाइत के रुकने रुकीं शाडे कौसैन के नाईबे अक्वलीं

यारे गारे शह-शाडे हुन्या व दीं अरुदकुस्सादिकीं सय्यिदुल मुत्तकीं

यश्मो गोशे वजरत पे लाफ़ों सलाम

करमाने मुस्तक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुइद शरीफ़ पढे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा. (अनवर)

तीन चीज़ें पसन्द हैं

मुशीरे रसूले अन्वर, आशिके शहन्शाहे बहरो बर, उजरते सय्यिदुना सिदीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं मुझे तीन चीज़ें पसन्द हैं : يَا'نِي أَنْظُرُ إِلَيْكَ وَأَنْفَاقُ مَالِي عَلَيْكَ وَالْجُلُوسُ بَيْنَ يَدَيْكَ : (1) आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ये डूर ओ पुर अन्वार का दीदार करते रहना (2) आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर अपना माल खर्च करना और (3) आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की आरगाह में हाज़िर रहना. (تفسير روح البيان ج 6 ص 264)

मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रहमते आलम में जो रहा डूं जमाने में आप ही के लिये तुम्हारी याद को कैसे न ज़िन्दगी समजूं ये ही तो अक सधारा है ज़िन्दगी के लिये

तीनों आरजूओं पर आर्ध

अल्लाहु दावर عَزَّوَجَلَّ ने उजरते सय्यिदुना सिदीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की ये छ तीनों ज्वाहिशों हुब्बे रसूले अन्वर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के सदके पूरी फ़रमा दीं (1) आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को सफ़र व उजर में रफ़ाकते उबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ नसीब रही, यहाँ तक के गारे सौर की तन्हाई में आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के सिवा कोई और ज़ियारत से मुशरफ़ होने वाला न था (2) ईसी तरह माली कुरबानी की सआदत ईस कसरत से नसीब हुई के अपना सारा माल व सामान सरकारे दो जहाँ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के कदमों पर कुरबान कर दिया और (3) मज़ारे पुर अन्वार में भी अपनी दाईमी रफ़ाकत व कुर्बत ईनायत फ़रमाई.

ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : મુઝ પર કસરત સે દુરુદે પાક પદો બેશક તુમ્હારા મુઝ પર દુરુદે પાક પદના તુમ્હારે ગુનાહોં કે લિયે મુગકિરત હૈ (મુસ્તફા)

મુહમ્મદ હૈ મતાએ આલમે ઈજાદ સે પ્યારા

પિદર માદર સે માલો જાન સે ઔલાદ સે પ્યારા

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

કાશ ! હમારે અન્દર ભી જઝબા પૈદા હો જાએ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! આશિકે અકબર એ રાહ હૈ. રાહે ઈશક મેં આશિક અપની ઝાત કી પરવાહ નહીં કરતા બલકે ઉસ કી દિલી તમન્ના યેહી હોતી હૈ કે રિઝાએ મહબૂબ કી ખાતિર અપના સબ કુછ લુટા દે. કાશ ! હમારે અન્દર ભી ઐસા જઝબએ સાદિકા પૈદા હો જાએ કે ખુદા વ મુસ્તફા કી રિઝા કી ખાતિર અપના સબ કુછ કુરબાન કર દેં.

જાન દી, દી હુઈ ઉસી કી થી

હક તો યેહ હૈ કે હક અદા ન હુવા

મહબૂબત કે ખોખલે દા'વે

અફસોસ ! સદ કરોડ અફસોસ ! અબ મુસલમાનોં કી અક્સરિય્યત કી હાલત યેહ હો ચુકી હૈ કે ઈશકો મહબૂબત કે ખોખલે દા'વે ઔર જાનો માલ લુટાને કે મહૂઝ ના'રે લગાતે હૈં, ઝાહિરી હાલત દેખ કર ઐસા લગતા હૈ ગોયા ઈન કે નઝદીક દુન્યા કી કદ્ર (ઈઝ્ઝત) ઈસ કદર બઢ ગઈ હૈ કે ﷺ ઈસ્લામી અકદાર કી કોઈ પરવાહ નહીં રહી, નબિય્યે રહમત, ગમ ગુસારે ઉમ્મત કી આંખોં કી ઠન્ડક (યા'ની નમાઝ) કી પાબન્દી કા કુછ લિહાઝ નહીં, ગૈરોં કી નક્કાલી મેં ઈસ કદર મહૂવિય્યત કે

ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો મુજ પર એક દુરુદ શરીફ પઢતા હો અલ્લાહ ઘુઝુલ (સ કે લિયે એક કીરાત અજર લિખતા હો ઓર કીરાત ઉઘુદ પહાડ જિતના હો. (મુજાહિદ)

ઈતિબાએ સુન્નાત કા બિલકુલ ખયાલ નહીં. અલ્લાહુ દાવર غُزُوْلُ દાવર હમં આશિકે અકબર હઝરતે સય્યિદુના સિદ્દીકે અકબર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે સદકે વલ્વલએ ઈશકો મહબ્બત ઓર જઝબએ ઈતિબાએ સુન્નાત ઈનાયત ફરમાએ.

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

તૂ ઈંગ્રેઝી ફેશન સે હર દમ બચા કર મુઝે સુન્નાતોં પર ચલા યા ઈલાહી !

ગમે મુસ્તફા દે ગમે મુસ્તફા દે હો દર્દે મદીના અતા યા ઈલાહી !

(વસાઈલે બખ્શિશ)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

યારે ગાર કા માલી ઈસાર

ગઝવએ તબૂક કે મૌકઅ પર નબિય્યે કરીમ, રઝિકુરહીમ عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ ને અપની ઉમ્મત કે અગ્નિયા (યા'ની માલદારો) ઓર અરબાબે સરવત (યા'ની દૌલત મન્દો) કો હુકમ દિયા કે વોહ અલ્લાહુ રબ્બુલ ઈબાદ غُزُوْلُ કે રાસ્તે મેં જિહાદ કે લિયે માલી ઈમદાદ મેં બઢ ચઢ કર હિસ્સા લેં તાકે મુજાહિદીને ઈસ્લામ કે લિયે ખુદોં નોશ (યા'ની ખાને પીને) ઓર સુવારિયોં કા ઈન્તિઝામ કિયા જા સકે. મહબૂબે રહમાન, શાહે કૌનો મકાન صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કે ઈસ ફરમાને રઝબત નિશાન કી તા'મીલ કરતે હુએ જિસ હસ્તી ને રાહે ખુદા غُزُوْلُ કે લિયે અપની સારી દૌલત બારગાહે રિસાલત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ મેં પેશ કી વોહ સહાબી ઈબને સહાબી, આશિકે અકબર હઝરતે સય્યિદુના સિદ્દીકે અકબર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ થે, આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને ઘર કા સારા માલો મતાઅ આકા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કે કદમોં મેં ઢેર કર દિયા. નબિય્યે મુખ્તાર, દો આલમ કે તાજદાર, શહન્શાહે

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुइडे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता है. (1)

अभरार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने यारे गार के एस एसार को देष कर ईस्तिफ़सार इरमाया : क्या अपने घर बार के लिये भी कुछ छोडा ? असद अ-दभो अहतिराम अर्ज गुजार हुअे : “उन के लिये मैं अल्लाह और उस के रसूल को छोड आया हूं.” (मतलब येह है के मेरे और मेरे अहलो ईयाल के लिये अल्लाह व रसूल काई हें) (سبل الهدى والرشاد في سيرة خير العباد، ص ٤٣٥)

शाईर ने एस जळभअे जं निसारी को यूं नजम किया है :

ईतने में वोड रईके नुबुवत भी आ गया जिस से बिनाअे ईशको मडभत है उस्तुवार
ले आया अपने साथ वोड मर्दे वझ सरिशत डर यीज जिस से यशमे जहां में हो अे’तिबार
भोले हुजूर, याहिये किंके ईयाल भी कडने लगा वोड ईशको मडभत का राजदार
अै तुज से दीदअे मडो अन्जुम इरोग गीर अै तोरी जात बाईसे तकवीने इजगार
परवाने को यराग तो भुलभुल को इल अस

सिदीक के लिये है भुदा का रसूल अस

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْرُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

सिदीके अकभर की शान और कुरआन

आ’ला डजरत, अजीमुल अ-र-कत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ईमामे ईशको मडभत अलहाज अल कारी अल हाकिम शाह ईमाम अहमद रजा भान عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ الرَّحْمَنِ नकल इरमाते हें : “डजरते सय्यिदुना ईमाम इफ़्रुदीन राजी عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ الْبَاهِي ने “मझातीहुल गैब (तफ़सीरे कबीर)” में इरमाया के सूरअे वल्लैल (डजरते सय्यिदुना) अबू अक की सूरह है और सूरअे वदुहा (डजरते सय्यिदुना) मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सूरह है.”

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शम्स मुज पर दुवदे पाक पढ़ना बूल गया वोड जन्त का रास्ता बूल गया. (10)

वस्के रुष उन का किया करते हैं शर्ह वशम्सो दुहा करते हैं
उन की डम मद्दो सना करते हैं जिन को मडमूद कडा करते हैं

(हदाथके बष्शिश शरीफ)

आ'ला उजरत की तशरीह

मेरे आका आ'ला उजरत, एमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह एमाम अहमद रजा पान رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ उजरते सय्यिदुना एमाम इफ्रुदीन राजी رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي के एस कौले मुबारक की तशरीह करते हुअे फरमाते हैं : उजरते सय्यिदुना सिदीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की सूरह को “वद्लैल” का नाम देना और मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सूरह का नाम “वदुहा” रचना गोया एस बात की तरफ़ एशारा है के नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सिदीक का नूर और उन की हिदायत और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ उन का वसीला जिन के जरीअे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इज़ल और उस की रिजा तलब की जाती है और सिदीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ, नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की राहत और उन के उन्स व सुकून और एत्मीनाने नइस की वजह हैं और उन के मद्दरमे राज और उन के पास मुआ-मलात से वाबस्ता रहने वाले, एस लिये के अल्लाह तबा-र-क व तआला फरमाता है : **“और रात को पर्दापोश किया.”** وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا (10: 30) और अल्लाह तआला फरमाता है :

جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ
“तुम्हारे लिये रात और दिन बनाये के रात में आराम करो
और दिन में उस का इज़ल ढूंडो और एस लिये के तुम डक

કરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तहकीक वोह भदभप्त हो गया. (अस)

માનો.” (20, 21, 22) और येह ईस बात की तरफ़ तस्मीह (या'नी
 ईशारा) है के दीन का निजाम ईन दोनों (महबूबे रब्बे अकबर व
 सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ سے काईम है जैसे
 के दुन्या का निजाम दिन रात से काईम है तो अगर दिन न हो तो
 कुछ नजर न आये और रात न हो तो सुकून हासिल न हो.
 (मापूज अज इतावा 2-अविख्या, जि. 28, स. 679, 681)

भास उस साभिके सैरे कुर्बे जुदा औहटे कामिलियत पे लाभों सलाम
 सायये मुस्तफा, मायये ईस्तफा ईज्जो नाजे भिलाइत पे लाभों सलाम
 अस्हकुस्सादिकी, सय्यिदुल मुत्की यश्मो गोशे वजारत पे लाभों सलाम
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ!

मिम्बरे मुनव्वर के जीने का अेहतिराम

त-भरानी ने औसत में हजरते सय्यिदुना ईब्ने उमर
 के उवाले से बयान किया है के ता जीस्त (या'नी
 जिन्दगी भर) हजरते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ
 मिम्बरे मुनव्वर पर उस जगह नहीं बैठे जहां हुजूर
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ फ़रमा होते थे, ईसी तरह हजरते
 सय्यिदुना उमर फ़ाड़के आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ, हजरते सय्यिदुना
 सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की जगह और हजरते सय्यिदुना
 उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हजरते सय्यिदुना उमर फ़ाड़के आ'जम
 رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की जगह पर जब तक जिन्दा रहे कभी नहीं बैठे.

(تَارِيخُ الْخُلَفَاءِ ص ٧٢)

सरकारे नामदार का यार

भीठे भीठे ईस्लामी ભાઈયો ! जिस तरह मुहब्बे महरे
 मुनव्वर, रफ़ीके रसूले अन्वर, आशिके अकबर हजरते सय्यिदुना

करमाने मुरतफ़े صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरदे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्रात मिलेगी (रुतबे)

सिद्दीके अकबर رضى الله تعالى عنه को महुबूबे रब्बे अकबर, दौ आलम के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से बे पनाह ईशको महुब्बत थी, ईसी तरह रसूले रहमत, सरापा जूदो सभावत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ भी सिद्दीके अकबर رضى الله تعالى عنه से महुब्बत व शक़कत इरमाते. आ'ला हजरत, ईमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रज़ा खान عَالِمُ دَعْوَةِ الْإِسْلَامِ ने “इतावा र-जविय्या” की जिल्द नम्बर 8 सफ़हा 610 पर वोह अहादीसे मुभा-रका जम्अ इरमाई जिन में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने ध्यारे सिद्दीके अकबर رضى الله تعالى عنه की शाने रिफ़्अत निशान बयान इरमाई है युनान्ये तीन रिवायात मुला-हज़ा इरमाईये : (1) खिबरुल उम्मह (या'नी उम्मत के बहुत बडे आलिम) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) के सहाभा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ओक तालाब में तशरीफ़ ले गअे, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : हर शप्स अपने यार की तरफ़ पैरे (या'नी तैरे). सभ ने औसा ही किया यहां तक के सिर्फ़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ और (हज़रते सय्यिदुना) अबू भक़ सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ आकी रहे, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सिद्दीक (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) की तरफ़ पैरे (या'नी तैरे) के तशरीफ़ ले गअे और उन्हें गले लगा कर इरमाया : “मैं किसी को भलील बनाता तो अबू भक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को बनाता लेकिन वोह मेरा यार है.” (2) हज़रते (सय्यिदुना) जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है के हम भिदमते अकदस

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुद्रुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की.

(मिज़ान)

हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में छाज़िर थे, एश्राफ़ इरमाया : एस वक्त तुम पर वोह शप्स यमके (या'नी जाहिर हो) गा के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे भा'द उस से बेहतर व बुजुर्ग तर किसी को न बनाया और उस की शफ़ाअत, शफ़ाअते अम्बियाअे किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) के मानिन्द होगी. हम छाज़िर ही थे के (हज़रते सय्यिदुना) अबू भक सिदीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ नज़र आअे, सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने क्रियाम इरमाया (या'नी षडे हो गअे) और (हज़रते सय्यिदुना) सिदीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को प्यार क्रिया और गले लगाया. (तारीखे अगदाद, ज़ि. 3, स. 340) (3) हज़रते (सय्यिदुना) अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है, मैं ने हुज़ूरे अकदस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अमीरुल मुअमिनीन (हज़रते सय्यिदुना) अली (अल मुर्तज़ा) كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ النُّكْرِيم के साथ षडे देषा, एतने में अबू भक सिदीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ छाज़िर हुअे. हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन से मुसा-इहा इरमाया (या'नी हाथ मिलाअे) और गले लगाया और उन के दहन (या'नी मुंह) पर बोसा दिया. मौला अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ النُّكْرِيم ने अर्ज़ की : क्या हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) अबू भक (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) का मुंह यूमते हैं ? इरमाया : “अै अबुल हसन¹ (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ! अबू भक (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) का मर्तबा मेरे यहां अैसा है जैसा मेरा मर्तबा मेरे रभ (عَزَّوَجَلَّ) के हुज़ूर.”

(इतावा 2-अविध्या मुपर्ज़ा, ज़ि. 8, स. 610, 612)

1 : अपने षडे शहजादे हज़रते सय्यिदुना एमाम ह-सने मुजतबा عنه رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की निस्बत से अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अविध्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ النُّكْرِيم की कुन्यत “अबुल हसन” है.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शहाअत करूंगा.
(क़ुरआन)

कहीं गिरतों को संभालें, कहीं इठों को मनाअें जोहेंँ ँल्लाह की जउ आ'दे पयम्बर सिदीक
तू है आजाद सकर से तेरे बन्दे आजाद है येह सालिक भी तेरा बन्दे अे जउ सिदीक

(दीवाने सालिक अज मुफ़्ती अहमद यार ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

मुरीदे कामिल

मेरे आका आ'ला हजरत, ँमामे अहले सुन्नत, मौलाना
शाह ँमाम अहमद रज़ा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن “इतावा र-अविथ्या
शरीफ़” में इरमाते हैं : “औलियाअे क़िराम اللهُ السّلام इरमाते
हैं के पूरी काअेनात में मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जैसा न कोँ
पीर है और न अबू बक़ सिदीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जैसा कोँ मुरीद
है.” (इतावा र-अविथ्या मुभर्रज़ा, जि. 11, स. 326)

अकल है तेरी सिपर, ँशक है शमशीर तेरी मेरे दरवेश ! भिवाइत है जहांगीर तेरी
मा सिवा अल्लाह के विये आग है तकबीर तेरी तू मुसल्मां हो तो तकदीर है तदबीर तेरी

की मुहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं

येह जहां थीज है क्या, लौहो कलम तेरे हैं

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

सिदीके अकबर ने ँमामत इरमाँ

दा'वते ँस्लामी के ँशाअती ँदारे मक-त-अतुल मदीना
की मत्बूआ 92 सइहात पर मुश्तमिल क़िताब, “सवानेहे
करबला” सइहा 41 पर है : बुखारी व मुस्लिम ने हजरते
(सय्यिदुना) अबू मूसा अश्मरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत की,

ફરમાને મુસ્તકિ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : મુઝ પર દુરુદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમ્હારે લિયે તહારત હૈ. (બ્રહ્મણ)

હુઝૂરે અકદસા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ મરીઝ હુએ ઓર મરઝ ને ગ-લબા કિયા તો ફરમાયા કે અબૂ બક્ર કો હુકમ કરો કે નમાઝ પઢાએ. સય્યિ-દતુના આઈશા સિદીકા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ને અર્ઝ કી : યા રસૂલલ્લાહ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! વોહ નર્મ દિલ આદમી હૈં આપ કી જગહ ખડે હો કર નમાઝ ન પઢા સકેંગે. ફરમાયા : હુકમ દો અબૂ બક્ર કો કે નમાઝ પઢાએ. હઝરતે સય્યિ-દતુના આઈશા સિદીકા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ને ફિર વોહી ઉઝૂર પેશ કિયા. હુઝૂર (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ને ફિર યેહી હુકમ બ તાકીદ ફરમાયા ઓર હઝરતે સય્યિદુના અબૂ બક્ર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને હુઝૂર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآલِهِ وَسَلَّمَ કી હયાતે મુબારક મેં નમાઝ પઢાઈ. યેહ હદીસે મુ-તવાતિર હૈ (જો કે) હઝરતે આઈશા વ ઈબ્ને મસઉદ વ ઈબ્ને અબ્બાસ વ ઈબ્ને ઉમર વ અબ્દુલ્લાહ બિન ઝમ્મા વ અબૂ સઈદ વ અલી બિન અબી તાલિબ વ હફ્સા (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ) વ ગૈરહુમ સે મરવી હૈ. ઉ-લમા ફરમાતે હૈં કે ઈસ હદીસ મેં ઈસ પર બહુત વાઝેહ દલાલત હૈ કે હઝરતે સિદીક رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ, મુત્લકન તમામ સહાબા સે અફઝલ ઓર ખિલાફત વ ઈમામત કે લિયે સબ સે અહક વ ઓલા (યા'ની ઝિયાદા હકદાર ઓર બેહતર) હૈં.

(تَارِيخُ الْخُلَفَاءِ ص ٤٧٠-٤٨٠)

ઈસ્મ મેં, ઝોહ્દ મેં બે શુબા તૂ સબ સે બઢ કર કે ઈમામત સે તેરી ખુલ ગએ જોહર સિદીક ઈસ ઈમામત સે ખુલા તુમ હો ઈમામે અકબર થી યેહી રમ્ઝે નબી કહતે હૈં હૈદર સિદીક

(દીવાને સાલિક)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْرُ!

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! આશિકે સાદિક કી યેહ

કરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : તુમ જહાં ભી હો મુઝ પર દુરદ પદો કે તુમહારા દુરદ મુઝ તક પહોંચતા હૈ. (طبرانی)

પહચાન હૈ કે વોહ હર આન, યાદે મહબૂબ કો હિર્ઝે જાં બનાએ રખતા હૈ. ઈશકે રસૂલ કી લઝઝત સે ના આશના લોગોં કો જબ આશિકોં કે અન્દાઝ સમઝ મેં નહીં આતે તો વોહ ઉન કા મઝાક ઉડાતે, ફત્તિયાં કસતે ઔર બાતેં બનાતે હૈં. એક શાઈર ને ઐસે ના સમઝોં કો સમઝાતે હુએ ઔર હકીકી ઉશ્શાક કે દીવાનગી સે ભરપૂર જઝબાત કી તરજુમાની કરતે હુએ કહા :

ન કિસી કે રક્સ પે તન્ઝ કર ન કિસી કે ગમ કા મઝાક ઉડા

જિસે યાહે જૈસે નવાઝ દે, યેહ મિઝાજે ઈશકે રસૂલ હૈ

صَلُّوا عَلَيَّ الْكَيْبِ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

પુદા કી કસમ અગર હમેં આશિકે અકબર હઝરતે સચ્ચિદુના સિદ્દીકે અકબર صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ કે ઈશકે રસૂલ કે એક ઝરેં કા કરોડવાં હિસ્સા ભી અતા હો જાએ તો હમારા બેડા પાર હો જાએ.

દૌલતે ઈશક સે આકા મેરી ઝોલી ભર દો

બસ યેહી હો મેરા સામાન મદીને વાલે

આપ કે ઈશક મેં ઐ કાશ ! કે રોતે રોતે

યેહ નિકલ જાએ મેરી જાન મદીને વાલે

મુઝ કો દીવાના મદીને કા બના લો આકા

બસ યેહી હૈ મેરા અરમાન મદીને વાલે

કાશ ! અત્તાર હો આઝાદ ગમે દુન્યા સે

બસ તુમહારા હી રહે ધ્યાન મદીને વાલે

(વસાઈલે બખ્શિશ)

صَلُّوا عَلَيَّ الْكَيْبِ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

ગારે સૌર કા સાંપ

હિજરતે મદીનએ મુનવ્વરહ કે મૌકઅ પર સરકારે

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर इस मर्तबा दुइडे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रहमतें नाज़िल करमाता है. (ज़र्रि)

नामदार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के राजदार व ज़ां निसार, यारे गार व यारे मजार हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ज़ां निसारी की ज़ो आ'ला मिसाल काँम इरमाँ वोल ली अपनी जगह बे मिसाल है, थोडे बहुत अल्फ़ाज़ के इर्क के साथ मुप्तलिफ़ किताबों में इस मज़मून की रिवायात मिलती हैं के ज़ब अल्लाह के हबीब, हबीबे लबीब, बेयैन दिलों के तबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ गारे सौर के करीब पहाँये तो पडले हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ गार में दाखिल हुअे, सफ़ाँ की, तमाम सूराओं को बन्द किया, आखिरी दो सूराअ बन्द करने के लिये कोँ यीज़ न मिली, तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने पाँ मुबारक से उन दोनों को बन्द किया, फिर रसूले करीम, رِئِيسُ رِئِيسِ الْفَضْلِ وَالصَّلَوةِ وَالسَّلَامِ से तशरीफ़ आ-वरी की दर-प्वास्त की : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अन्दर तशरीफ़ ले गअे और अपने वफ़ादार, यारे गार व यारे मजार सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के ज़ानू पर सरे अन्वर रअ कर महुवे ईस्तिराहत हो गअे (या'नी सो गअे). उस गार में अेक सांप था उस ने पाँ में उस लिया मगर कुरबान जाँये उस पैकरे ईशको महब्बत पर के दई की शिदत व कुल्फ़त (या'नी तकलीफ़) के बा वुजूद महुज़ इस अयाल से के मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के आराम व राहत में अलल वाकेअ न हो, अ दस्तूर साकिन व सामित (या'नी बे ह-र-कत व आमोश) रहे, मगर शिदते तकलीफ़ की वजह से गैर ईप्तियारी तौर पर यश्माने मुबारक (या'नी आंओं) से आंसू अह निकले और ज़ब अशके ईशक के यन्द कतरे महबूबे करीम رِئِيسُ رِئِيسِ الْفَضْلِ وَالصَّلَوةِ وَالسَّلَامِ के वजहे करीम (या'नी करम वाले येहरे) पर निछावर हुअे तो शाहे आली वकार, हुम बे

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुश्म शरीक न पड़े तो वोह लोगों में से (शुभ) है। (तरीन शास) ३

कसों के गम गुसार अल्ले त्ताली एल्ले व्वाले व्वाले व्वाले : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुश्म शरीक न पड़े तो वोह लोगों में से
 करमाया : ऐ अबू भक (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) ! क्यूं रोते हो ? उजरते
 सखिदुना अबू भक सिदीक र्वा अल्ले त्ताली एल्ले व्वाले व्वाले ने सांप के उसने का
 वाकिआ अर्ज किया. आप अल्ले त्ताली एल्ले व्वाले व्वाले ने उसे हुअे डिस्से
 पर अपना लुआबे दहन (या'नी थूक शरीक) लगाया तो कौरन
 आराम मिल गया. (مَشْكَاتُ الْمُصَابِيحِ ج ٤ ص ٤١٧ حدیث ٦٠٣ وغیره)

न क्यूंकर कहुं या उभीभी अगिस्नी !

ईसी नाम से हर मुसीबत टली है

मन्जिले सिद्को ईशक के रडभर उजरते सखिदुना सिदीके
 अकभर र्वा अल्ले त्ताली एल्ले व्वाले व्वाले की अ-उमत और गारे सौर वाली डिकायत
 की तरफ ईशारा करते हुअे किसी शाईर ने क्या भूभ कहा :

यार के नाम पे मरने वाला सभ कुछ सा-दका करने वाला
 अदी तो रभ दी सांप के भिल पर उडर का सदमा सह लिया दिल पर
 मन्जिले सिद्को ईशक का रडभर येह सभ कुछ है भातिरे दिलभर

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْرُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

अदलाउ उमारे साथ है

उजरते सखिदुना अबू भक सिदीक र्वा अल्ले त्ताली एल्ले व्वाले व्वाले
 रसूले जी वकार, शह-शाहे अबरार, साहिबे पसीनअे भुशबूदार
 र्वा अल्ले त्ताली एल्ले व्वाले व्वाले के उमराउ गारे सौर में तशरीक ले गअे तो
 कुफ़ारे ना उन्जर तकरीबन गार के करीब पड़ोंय युके थे, इन

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक भाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइरे पाक न पड़े (सम)

दोनों मुकदस हस्तियों की गार में मौजूदगी को अल्लाहु रब्बुल उला
عَزَّوَجَلَّ ने पारह 10 सू-रतुत्तौबह आयत नम्बर 40 में यूं बयान
इरमाया :

ثَانِي أَتَيْنَ إِذْ هُمْ فِي الْغَارِ तर-ज-मअे कन्जुल र्मान : सिई दो
जान से जब वोह दोनों गार में थे .

आ'ला हजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ र्सी वाकिअे की तरई र्शारा
करते हुअे सिदीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की शाने अ-उमत निशान
यूं बयान इरमाते हैं :

या'नी उस अइ-उलुल भलके आ'दरुसुल
सानियस्नेने डिजरत पे लाभों सलाम

(हदाईके बप्शिश शरीफ)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने र्न दोनों मुकदस हस्तियों की डिफ़ाजत के
आहिरी अरबाब त्नी पैदा इरमा दिये वोह र्स तरह के जूँडी जनाबे
रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हजरते सय्यिदुना सिदीके अकबर
رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की मर्य्यत (या'नी हमराही) में गारे सौर में दाभिल
हुअे तो फुदाई पहरा लगा दिया गया के गार के मुंड पर मकडी
ने जाला तन दिया और कनारे पर कभूतरी ने अन्डे दे दिये.
दा'वते र्स्लामी के र्शाअती र्दारे

मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 680 सइहात पर मुशतमिल
किताब, "मुका-श-इतुल कुलूब" के सइहा 132 पर है : येह सब
कुछ कुइइरे मक्का को गार की तलाशी से आउ रभने के लिये किया
गया, उन दो कभूतरों को रब्बे जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ ने अैसी बे मिसाल
जजा दी के आज तक ह-रमे मक्का में जितने कभूतर हैं वोह उन्ही
दो की औलाद हैं, जैसे उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुकम से नबिय्ये

करमाने मुस्तकاً صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोझे जुमुआ दो सो बार दुरेदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ करोगे (क़ुरआन)

रहमत वः عَزَّوَجَلَّ ने भी हरम में उन के शिकार पर पाबन्दी आर्षद करमा दी.

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ج ١ ص ٥٧ دارالكتب العلمية بيروت)

फ़ानूस बन के जिस की डिफ़ाजत डवा करे

वोड शम्भ कया बुजे जिसे रोशन भुदा करे

जब कुर्फ़ारे कुरैश ने वहां कबूतरों का घोंसला और उस में अन्दे देभे तो कडने लगे : अगर इस गार में कोई इन्सान मौजूद होता तो न मकड़ी जाला तनती न कबूतरी अन्दे देती. कुर्फ़ार की आडट पा कर आशिके अकबर उतरते सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ घबरा गये और अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! अब दुश्मन हमारे इस कदर करीब आ गये हैं के अगर वोड अपने कदमों पर नजर डालेंगे तो हमें देभ लेंगे. हुजुरे अकरम, नूरे मुजस्सिम لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ने इरमाया : عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام

(प. १०, १, التوبة: ६०) तर-ज-मअे कन्जुल इमान : “गम न पा, भेशक अल्लाह हमारे साथ है.”

आ'ला उतरत, इमाम अहमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मक्के मदीने के सुल्तान, सरवरे ज़ीशान, सरकारे दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इस मो'जिजमे आलीशान और प्वारिये दुश्मनान को बयान करते हुअे इरमाते हैं :

जान हैं, जान कया नजर आये कयूं अदू गिर्द गार इरते हैं

(इदाईके बप्तिश शरीफ)

इर आशिके अकबर उतरते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर

(ابن عربی) : صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم : मुझ पर दुःख शरीफ़ पढे अल्लाह तुम ग़ुज़ुल पर रहमत भेजेगा.

رضی اللہ تعالیٰ عنہ पर सकीना उतर पडा के वोह बिलकुल ही मुत्मईन और बे षौफ़ हो गये और यौथे दिन यकुम रबीउन्नूर बरोज हो शम्भा (या'नी पीर शरीफ़) हुजूरे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ गार से बाहर तशरीफ़ लाये और मदीनअे मुनव्वरह उएظیمًا रवाना हो गये. (भाभूअ अअ अजार्बुल कुरआन मअ गरार्बुल कुरआन, स. 303, 304, मक-त-अतुल मदीना बाबुल मदीना करायी)

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْرُ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيَّ مُحَمَّدًا

वाह रे ! मकडी तेरा मुकदर !

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! मडभूबे रब्बे

अकबर رضي الله تعالى عنه और सिद्दीके अकबर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ काम्याब व बा मुराद हुअे और तलाश करने वाले कुर्फारे बढ अत्वार नाकाम व ना मुराद हुअे. मकडी ने जस्तुजू का दरवाजा बन्द कर के गार का दहाना (मुंह) अैसा बना दिया के वहां तक सुराग रसानों (या'नी जसूसों) की सोच भी न पड़ोय सकी और वोह मायूस हो कर वापस पलटे और मकडी को ला जवाल सआदत मुयस्सर आर्ष जिस को “मुका-श-इतुल कुलूब” में उअरते सय्यिदुना ईब्ने नकीब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَسِيب ने कुछ यूं बयान किया : रेशम के कीड़ों ने अैसा रेशम बुना जो हुस्न में यकता (या'नी बे भिसाल) है मगर वोह मकडी ईन से लाभ द-रजे बेहतर है ईस लिये के उस ने गारे सौर में सरकारे आली वकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये गार के दहाने (या'नी मुंह) पर जाला बुना था.

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ج ١ ص ٥٧)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيَّ مُحَمَّدًا

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْرُ!

करमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर अके बार दुइडे पाक पढा अदलाह (مكاشفة القلوب 1 ج ص 58)

गार के उस पार समुन्दर नजर आया !

बा'ज सीरत निगारों ने लिखा है के हजरते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर رضى الله تعالى عنه, ने जब दुश्मन के देख लेने का पदशा ज़ाहिर किया तो आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरमाया : अगर येह लोग उधर से दाभिल हुअे तो हम उधर से निकल जाअेंगे. आशिडे अकबर सय्यिदुना सिद्दीके अकबर رضى الله تعالى عنه ने जूं ही उधर निगाह की तो दूसरी तरफ़ अके दरवाजा नजर आया जिस के साथ अके समुन्दर ठाठें मार रहा था और गार के दरवाजे पर अके कश्ती बंधी हुई थी.

(مكاشفة القلوب 1 ج ص 58)

तुम हो डकीजे मुगीस क्या है वोह दुश्मन जभीस तुम हो तो फिर भौक़ क्या तुम पे करोडों दुइडे आस है न कोई पास अके तुम्हारी है आस बस है येही आसरा तुम पे करोडों दुइडे

(हदाईके बप्पिश शरीफ़)

मुसीबत में आका से मदद मांगना सदाबा का तरीका है

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! आप ने सरवरे जीशान, रहमते आ-लमियान, शाहे कौनो मकान صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का मो'जिज्जमे राहत निशान मुला-हजा इरमाया के गारे सौर की दूसरी तरफ़ आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की निगाहे पुर अन्वार की ब-र-कत से यारे गार व यारे मजार رضى الله تعالى عنه को कश्ती व समुन्दर नजर आअे और यूं ईजाने रिसालत से आप رضى الله تعالى عنه येन व राहत महसूस इरमाने लगे. ईस वाकिअे से मजीद येह भी पता यला के महबूबे रब्बुल ईबाद, राहते हर कलबे नाशाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم से हाजत व मुसीबत के वक्त त-लबे ईमदाद सदाबअे किराम عليهم الرضوان का तरीका है :

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने क़िताब में मुज पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा क़िरिशते उस के लिये क़स्तिग़दार करते रहेंगे. (अल)

यूं मुज को मौत आये तो क्या पूछना मेरा
में भाक पर निगाह दरे यार की तरफ़

(ज़ौके ना'त)

मुफ़स्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद
यार पान عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ الْكَافِرَاتِ सिद्दीके अकबर की मुबारक शान बयान
करते हुअे फ़रमाते हैं :

बेहतरी जिस पे करे इफ़्र वोह बेहतरी सिद्दीक सरवरी जिस पे करे नाज वोह सरवर सिद्दीक
जीस्त में मौत में और कफ़्र में सानी ही रहे सानियस्नेन के ईस तरह हैं मजहूर सिद्दीक
उन के मदाह नबी उन का सना गो अल्लाह उक अबुल इज़्ज़ल कहे और पयम्बर सिद्दीक
बाल बय्यों के लिये घर में फुदा को छोड़ें मुस्तफ़ा पर करें घर बार निछावर सिद्दीक
अक घर बार तो क्या गार में ज़ां भी दे दें
सांप उसता रहे लेकिन न हों मुज़्तर सिद्दीक

(दीवाने साखिक)

صَلُّوا عَلَيَّ الْكَافِرَاتِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

सफ़रे आभिरत में मुवा-इकत

मुफ़स्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद
यार पान عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ الْكَافِرَاتِ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
की वफ़ात ज़हूर के औद करने (या'नी लौट आने) से हुई.¹ ईसी
तरह हज़रते सय्यिदुना अबू बक़ सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की वफ़ात उस
वक्त सांप का ज़हूर लौट आने से हुई, जिस ने हिज़रत की रात गार
में आप को उसा था. हज़रते सिद्दीक को इनाफ़िर्सूल का वोह द-रज़ा
हासिल है के आप की वफ़ात भी हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

1 : ज़े ज़हूर गजवअे भौबर के मौकअ पर जैनब बिनते हारिस यहुदिया ने दिया था.

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रकमतें भेजता है.

की वफ़ात का नुमूना है, पीर के दिन में हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की वफ़ात और पीर का दिन गुजार कर शब में उठरते सिद्दीक रضى اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की वफ़ात. हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की वफ़ात के दिन शब को यराग में तेल न था, उठरते सिद्दीक रضى اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की वफ़ात के वक्त घर में कड़न के लिये पैसे न थे. येह है इना.

(مرأة المناجیح ج ۸/ص ۲۹۵ ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور)

ईमामे ईशको महुब्बत, यारे माहे रिसालत उठरते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर रضى اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की सफ़रे हिजरत की बे मिसाल उल्फ़त व अकीदत को सराहते हुअे आ'ला उठरत, अज़ीमुल अ-र-कत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं :

सिद्दीक बल्के गार में जां उस पे दे युके और डिफ़जे जां तो जान कुइजे गुरर की है डां ! तूने ईन को जान उन्हें इरे दी नमाज पर वोह तो कर युके थे जो करनी बशर की है

साबित हुवा के जुम्ला इराईज कुइअ हैं

अस्लुल उसूल अन्दगी उस ताजवर की है

(इदाईके अफ़िश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيِّبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! आप उठरात ने रसूले अन्वर, महुब्बे रब्बे अकबर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और महुब्बे उब्बीबे दावर, आशिके अकबर रضى اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के आभिरत के सफ़र में मुवा-इकत मुला-उजा इरमाई के शाहे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के घर अ वक्ते विसाल यराग में तेल न था

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शम्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोड जन्त का रास्ता भूल गया. (1/1)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जॉ निसार सिदीके पुश भिसाल
का डाल येड था के बे वफ़ा दुन्या की फ़ानी दौलत के
पीछे भागने के बज्जअे सरमायअे ईशको महब्बत को समेटा,
अपने आप को तकलीफ़ों में रभना गवारा किया और ईसी डालत
को राहते हर दो सरा (या'नी दोनों जहां का सुकून) जना.

जान हे ईशके मुस्तफ़ा रोज कुजूं करे¹ भुदा
जिस को डो दई का मजा नाजे दवा उठाअे क्यूं

(डदाईके बभिशश शरीफ़)

पता यला बारगाडे रब्बुल ईज़्जत में साहिबे कद्रो
मन्जिलत वोड नहीं जिस के पास मालो दौलत की कसरत है बल्के
साहिबे शराफ़त व फ़ीलत और जियादा जी ईज़्जत वोड है जो
जियादा तक्वा व परहेज गारी की दौलत से मालामाल है जैसा के
अल्लाहु मुज्जुबुदा'वात عَزَّوَجَلَّ का पारड 26 सू-रतुल हुजुरात की
आयत 13 में इरमाने ईज़्जत निशान है :

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : बेशक
अल्लाह के यहां तुम में जियादा
ईज़्जत वाला वोड है जो तुम में
जियादा परहेज गार है .

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!

सिदीके अकबर का गमे मुस्तफ़ा

बारगाडे ईलाही के मुकर्रब और प्यारे, दरबारे रिसालत
के यमकते दमकते सितारे, सुल्ताने दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की

1 : या'नी बढाअे, जियादा करे.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरदरे पाक न पड़ा तबकीक वोह बढभाप्त हो गया (1)

आंभों के तारे, दृषियारों के टूटे दिल्ों के सहारे उतरते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सरवरे काभेनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की आहिरी वफ़ात के मौकअ पर गभे मुस्तफ़ा में भे करार हो कर येह अश्आर कहे :

لَمَّا رَأَيْتُ نَبِيَّنَا مُتَجَدِّلاً ضَاقَتْ عَلَيَّ بِعَرَضِهَا الدُّورُ
فَارْتَاعَ قَلْبِي عِنْدَ ذَاكَ لِهٰلِكَهٖ وَالْعَظْمُ مِنِّي مَا حَيَّيْتُ كَسِيرُ
يَا لَيْتَنِي مِنْ قَبْلِ مَهْلِكِ صَاحِبِي غَيَّبْتُ فِي جَدَّتِ عَلَيَّ صُخُورُ

तरजमा : (1) जब मैं ने अपने नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की वफ़ात याफ़ता देभा तो मकानात अपनी वुस्मत के भा वुजूद मुझ पर तंग हो गभे (2) इस वक्त आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की वफ़ात से मेरा दिल लरज उठा और जिन्दगी भर मेरी हडी शिकस्ता (या'नी टूटी हुई) रहेगी (3) काश ! मैं अपने आका صَلَّی اللّٰهُ تَعालَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ के ईन्तिकाल से पहले यद्दानों पर कब्र में दफ़न कर दिया गया होता.

(الْمَوَاهِبُ اللَّذَنِيَّةُ لِلْقَسْطَلَانِي ج 3 ص 394 دار الكتب العلمية بيروت)

मुइस्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत उतरते मुइती अहमद यार भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلٰٓئِكَةِ “दीवाने सालिक” में गभे मुस्तफ़ा में इस तरह के जज्बात का ईजहार करते हुअे इरमाते हैं :

जिन्हें भल्क कडती है मुस्तफ़ा, मेरा दिल उन्हीं पे निसार है

मेरे कल्भ में हैं वोह जल्वागर के मदीना जिन का दियार है

वोह जलक दिभा के यले गभे मेरे दिल का येन भी ले गभे

मेरी रूह साथ न कयूं गई, मुझे अब तो जिन्दगी भार है

वोही भौत है वोही जिन्दगी, जो भुदा नसीब करे मुझे

के भरे तो उन ही के नाम पर, जो जिये तो उन पे निसार है

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

صَلُّوْا عَلَيَّ الْكَئِيبِ!

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुब्द और दस मरतबा शाम दुरदे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्रात मिलेगी (रुजूतुलमुत्त)

કાશ ! હમેં ભી ગમે મુસ્તફા નસીબ હો

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! આશિકે શાહે બહરો બર, રાહે ઈશ્કો મહબ્બત કે રહબર, આશિકે અકબર હઝરતે સચ્ચિદુના સિદ્દીકે અકબર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને અપની ઉલ્લેત વ અકીદત કા અશઆર મેં કિસ કદર સોઝ વ રિક્કત કે સાથ ઈઝહાર ફરમાયા હૈ, કાશ ! સરવરે કાએનાત કે વઝીર વ દિલબર હઝરતે સચ્ચિદુના સિદ્દીકે અકબર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે ગમે મુસ્તફા મેં બહને વાલે પાકીઝા આંસૂઓ કે સદકે હમેં ભી ગમે મુસ્તફા મેં રોને વાલી આંખેં નસીબ હો જાએં.

હિજરે રસૂલ મેં હમેં યા રબ્બે મુસ્તફા

ઐ કાશ ! ફૂટ ફૂટ કે રોના નસીબ હો

(વસાઈલે બખ્શિશ)

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْبِ! صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

પ્વાબ મેં દીદારે મુસ્તફા

આરિફ બિલ્લાહ હઝરતે અલ્લામા ઈમામ અબ્દુરહમાન જામી قُدْسِ سِرُّهُ السَّامِي ને અપની મશહૂર કિતાબ “શવાહિદુન્નુબુવ્વહ” મેં યારે ગાર વ યારે મઝાર, આશિકે શહન્શાહે અબરાર ખલીફએ અવ્વલ હઝરતે સચ્ચિદુના સિદ્દીકે અકબર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કી મુબારક ઝિન્દગી કે આખિરી અય્યામ કા એક ઈમાન અફરોઝ પ્વાબ નકલ ક્રિયા હૈ ઉસ કા કુછ હિસ્સા બયાન ક્રિયા જાતા હૈ યુનાન્યે સચ્ચિદુના સિદ્દીકે અકબર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હેં : એક દફ્આ રાત કે આખિરી હિસ્સે મેં મુઝે પ્વાબ કે અન્દર દીદારે મુસ્તફા કી સઆદત નસીબ હુઈ, આપ صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ને દો સફેદ કપડે ઝૈબે બદન ફરમા રબે

करमाने मुस्तक : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रद शरीक न पढा उस ने जका की।
(مجموعه الفتاوى)

थे और मैं इन कपड़ों के दोनों कनारों को मिला रखा था, अयानक वोह दोनों कपडे सज्ज होना और यमकना शुरुअ हो गये, उन की दरपशानी व ताबानी (या'नी यमक दमक) आंभों को पीरा (या'नी यकायौद) करने वाली थी, हुजूर पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझे “अस्सलामु अलय कुम” कह कर मुसा-इहा (या'नी हाथ मिलाने) से मुशर्रफ़ इरमाया और अपना हस्ते मुकदस मेरे सीनअे पुरदद पर रख दिया जिस से मेरा इजतिराबे कल्बी (या'नी दिल का बे करार होना) दूर हो गया फिर इरमाया : “अै अबू अक (رضى الله تعالى عنه) ! मुझे तुम से मिलने का बहुत इश्तियाक (या'नी ज्वाइश) है, क्या अभी वक्त नहीं आया के तुम मेरे पास आ जाओ ?” मैं ज्वाअ में बहुत रोया यहां तक के मेरे अहले जाना को भी मेरे रोने की जबर हो गई जिन्हों ने बेदार होने के आ'द मुझे ज्वाअ की इस गिर्या व ज़ारी से मुत्तलअ किया।

(شواهد النبوة للجامى ص ۱۹۹ مكتبة الحقيقة تركى)

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

यौमे वझात और कइन में शौके मुवा-इकत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 274 सइहात पर मुशतमिल किताअ, “सहाअे किराम का इशके रसूल” सइहा 67 पर मन्कूल है : उजरते सय्यिहुना सिदीके अकबर رضى الله تعالى عنه ने अपनी वझात से यन्द घन्टे पेशतर (या'नी कबल) अपनी शहजादी उजरते सय्यि-दतुना आइशा सिदीका के صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से दरयाइत किया के रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के कइन में कितने कपडे थे ? हुजूर रहमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा में क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत

वफ़ात शरीफ़ किस दिन हुई ? ईस सुवाल की वजह येह थी के आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی آرزو थी के कइ न व यौमे वफ़ात में हुजूर मुवा-इकत हो, जिस तरह हयात में हुजूर सरवरे काअेनात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इत्तिबाअ (या'नी पैरवी) की ईसी तरह ममात (या'नी वफ़ात) में भी हो.

(صَحِيحُ بُخَارِي حَدِيثُ ٣٨٧ ج ١ ص ٦٨ دار الكتب العلمية بيروت)

अद्लाह अद्लाह येह शौके इत्तिबाअ

कयूं न हो सिदीके अकबर थे

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

सिदीके अकबर की वफ़ात का सभब गमे मुस्तफ़ा था

अभीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना अबू भक सिदीक رضی اللہ تعالیٰ عنہ ईशके रसूले बा कमाल व बे मिसाल की दौलते ला जवाल से किस कदर मालामाल थे, आप के शबो रोज के अहवाल, बीबी आमिना के लाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ईशके बे मिसाल का मजहरे अतम (या'नी कामिल तरीन ईजहार) हैं. उम्मी नबी, रसूले हाशिमी, मक्की म-दनी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के विसाले आहिरी के बा'द आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ की मुबारक जिन्दगी में सन्ध-दगी जियादा गालिब आ गई और (तकरीबन 2 साल 7 माह पर मुश्तमिल) अपनी बकिया जिन्दगी के लैलो नहार (या'नी दिन रात) गुजारना इन्तिहाई हुशवार हो गया और आप यादे सरकारे नामदार رضی اللہ تعالیٰ عنہ में बे करार रहने लगे, युनान्चे हजरते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती

करमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुऒ पर दुऒदे पाक की कसरत करो बेशक येऒ तुम्हारे लिये तऒरत है. (तऒरिख)

शाई ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي नकल करते हैं : उऒरते सय्यिदुना अऒदुल्लाऒ ऒिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इरमाते हैं : उऒरते सय्यिदुना सिदीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की वऒात का अस्ल सऒऒ सरवरे काऒेनात की (ऒाऒिरी) वऒात था के ईसी सऒमे से आऒ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का मुऒारक ऒऒन धुलने लगा और येऒी वऒात का ऒाईस ऒना. (تاريخُ الخُلَفاءِ ص ٦٢ بتغير)

मर ऒी ऒाऒीं में अगर ईस ऒर से ऒाऒीं ऒो कऒम
क्या ऒये ऒीमारे गम कुऒो मसीऒा ऒोऒ कर

(ऒाँके ना'त)

मरीऒे मुस्तफ़ा

उऒरते सय्यिदुना ईमाम अऒदुरऒमान ऒलालुदीन सुयूती शाई ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي “तारीऒुल ऒु-लऒा” में नकल इरमाते हैं : उऒरते सय्यिदुना सिदीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के उमानऒे अलालत (या'नी ऒीमारी के अय्याम) में लोऒ ईयाऒत के लिये ऒाऒिर हुऒे और अऒऒ की : ऒै ऒा नशीने रसूल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ! ईऒाऒत ऒो तो ऒम आऒ के लिये तऒीऒ लाऒें. इरमाया : तऒीऒ ने तो मुऒे ऒेऒ लिया है. अऒऒ ऒिया : तऒीऒ ने क्या कऒा ? ईशाऒ इरमाया के उस ने इरमाया : “إِنِّي فَعَالٌ لِّمَا أُرِيدُ” (تاريخُ الخُلَفاءِ ص ٦٢) मुराऒ येऒ थी के ऒऒीम अदुल्लाऒ है, उस की मरऒी को कोई ऒाल नऒीं सकता, ऒो मशियत (या'नी मरऒी) है ऒऒर ऒोऒा. येऒ उऒरते सिदीके अकबर का तवऒकुले साऒऒक था और रिऒाऒे ऒक पर रऒी थे.

(सवानेऒे करऒला, स. 48, मक-त-ऒतुल मऒीना ऒाऒुल मऒीना कराऒी)

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरद पढ़ो के तुम्हारा दुरद मुझ तक पहुंचता है. (طبرانی)

में मरीजे मुस्तफ़ा हूँ मुझे छोड़ो न तबीबो !

मेरी जिन्दगी जो याहो मुझे ले यलो मदीना

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيِّبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

दिल मेरा दुन्या पे शैदा हो गया

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! आशिके साकिये कौसर,
अमीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर वाकेई
महबूबे रब्बे अकबर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के आशिके अकबर हैं.
गमे छिजरे मुस्तफ़ा व ईशके रसूले मुजतबा में भीमार हो जना
आप के “आशिके अकबर” होने की दलील है. दिल की कुठन
और जलन का साबाब सिर्फ़ महबूबे रब्बुल ईबाद
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की याद और उन का फिराक था और अक हम
हैं के हमारा दिल दुन्या की महबूबत, आरिजी हुस्नो जमाल
और यन्द रोजा जाहो जलाल ही का शैदा है और ईसी के लिये
तडपता, तरसता और नइसानी ज्वालिशात पूरी न होने पर
हस्स्तो यास से आहें भरता है.

दिल मेरा दुन्या पे शैदा हो गया औं मेरे अल्लाह येह क्या हो गया

कुछ मेरे बनने की सूरत कीजिये अब तो जो होना था मौला हो गया

औंभ पोशे भल्क दामन से तेरे

सब गुनहगारों का पर्दा हो गया

(जौके ना'त)

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيِّبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर दस मर्तबा दुरदे पाक पढा अब्बाह ايس पर सो रहमतें नाजिल
करमाता (البر)

सय्यिदुना सिदीके अकबर को ज़हूर दिया गया

आप رضى الله تعالى عنه के विसाले जाहिरी के अस्बाब मुफ्तलिफ़ बताये जाते हैं, बा'उ रिवायात के मुताबिक गारे सौर वाले सांप के ज़हूर के असर के औद करने (या'नी लौट कर आ जाने) के सबब आप رضى الله تعالى عنه की वफ़ात हो गई. अक सबब येह बताया गया के गमे मुस्तफ़ा में धुल धुल कर आप رضى الله تعالى عنه ने जान दे दी जबके एब्ने सा'द व हाकिम ने एब्ने शहाब से रिवायत की है के (सय्यिदुना सिदीके अकबर رضى الله تعالى عنه की वफ़ात का जाहिरी सबब येह था के) आप رضى الله تعالى عنه के पास किसी ने तोड़फ़तन भुजैरा (या'नी कीमे वाला दलिया) भेजा था, आप और हारिस बिन क-लदह दोनों पाने में शरीक थे (कुछ पाने के बा'द) हारिस ने (जो के तबीब था) अर्ज की : औ पलीफ़अे रसूलुल्लाह ! हाथ रोक लीजिये (और एसे न भाँये) के एस में ज़हूर है और येह वोह ज़हूर है जिस का असर अक साल में जाहिर होता है, आप رضى الله تعالى عنه देप लीजियेगा के अक साल के अन्दर अन्दर मैं और आप अक ही दिन झैत होंगे. येह सुन कर आप رضى الله تعالى عنه ने पाने से हाथ पींय लिया लेकिन ज़हूर अपना काम कर युका था और येह दोनों एसी दिन से बीमार रहने लगे और अक साल गुजरने के बा'द (उसी ज़हूर के असर से) अक ही दिन में एन्तिकाल किया.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वो ह मुज पर दुइद शरीक न पढे तो वो ह लोगों में से
 (نزهة القاری ج ۲ ص ۸۷۷ فریدبک اسٹال)

हाअे ! जलील दुन्या ! !

हाकिम की येह रिवायत शअबी से है के उन्हों ने कहा :
 ईस दुन्याअे हूं (या'नी जलील दुन्या) से हम भला क्या तवक्कोअ
 रभें के (ईस में तो) रसूले पुहा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी जहूर
 दिया गया और हजरते सय्यिदुना सिदीके अकबर رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ
 को भी. (अउन) ईन अकवाल में तआरुज (या'नी टकराव) नहीं,
 हो सकता है (वफ़ात शरीफ़ में) तीनों अस्बाब जम्अ हो गअे
 हों. (نزهة القاری ج ۲ ص ۸۷۷ فریدبک اسٹال) **भीठे भीठे ईस्लामी**
भाईयो ! वाकेई दुन्या की महब्बत अन्धी होती है, ईस जलील
 दुन्या की उल्फ़त की वजह से ही सरकारे मदीना, राहते कल्बो
 सीना. صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आशिके अकबर सय्यिदुना सिदीके
 अकबर رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जहूर दिया गया, जब काअेनात की
 सब से बडी हस्ती या'नी जाते न-बवी को भी जलील दुन्या के
 ना मुराह कुत्तों ने जहूर देने की नापाक साजिश की तो अब और
 कौन है जो अपने आप को ईस से महकूज समजे ! लिहाजा बिल
 पुसूस नामवर उ-लमा व मशाईअ और मजहबी पेशवाओं को
 जियादा मोहतात रहने की जइरत है. देखिये ना ! ईसी कमीनी
 दुन्या के ईशक में मस्त हो कर किसी ना बकार ने सय्यिदुल
 अस्त्रिया, राकिबे दौशे मुस्तफ़ा, नवासअे रसूल हजरते सय्यिदुना
 ईमाम ह-सने मुजतबा رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को भी कई बार जहूर
 दिया और आबिर जहूर **पूरानी** ही वफ़ात का बाईस बनी.
 नीज हजरते सय्यिदुना बिशर बिन बराअ रَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ हजरते
 सय्यिदुना ईमाम ज़'फ़रे सादिक عَلَيْهِ السَّلَام, हजरते सय्यिदुना
 ईमाम मूसा काजिम عَلَيْهِ السَّلَام, हजरते सय्यिदुना ईमाम अली

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : (उस शपथ की नाक भाक आवूट हो जिस के पास मेरा ठिक हो और वोह मुज पर दुरहे पाक न पड़े (फिर))

रजा और उजरते सय्यिदुना एमामे आ'उम अबू
उनीफ़ा عنه اللهُ تَعَالَى کی वफ़ाते इसरत आयात का सभभ ली जडूर
हुवा।

या रसूलल्लाह ! अबू भक ड़ाजिर है

विसाले आहिरी से कबल हैजयाभे हैजाने नुबुव्वत, साहिबे
इजीलतो करामत उजरते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर عنه اللهُ تَعَالَى
ने वसियत इरमाई के मेरे जनाजे को शाहे बहरो भर, मदीने के
ताजवर, उबीभे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के रौजमे अन्वर के पाक
दर के सामने ला कर रभ देना और كَلِّ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ
कर अर्ज करना : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! अबू भक
आस्तानमे आलिया पर ड़ाजिर है.” अगर दरवाजा फुट भ फुट
फुल जाये तो अन्दर ले जाना वरना जन्नतुल बकीअ में दफ़न कर
देना. जनाजमे मुभा-रका को इसभे वसियत जब रौजमे अकदस
के सामने रभा गया और अर्ज किया गया : كَلِّ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ
! अबू भक ड़ाजिर है. येह अर्ज करते ही दरवाजे का ताला फुट
भ फुट फुल गया और आवाज आने लगी :
أَدْخُلُوا الْحَبِيبَ إِلَى الْحَبِيبِ فَإِنَّ الْحَبِيبَ إِلَى الْحَبِيبِ مُشْتَاقٌ
को मडभूभ से मिला हो के मडभूभ को मडभूभ का इशतियाक है.

(تفسير كبير ج ١٠ ص ٦٧ اذ اراحيله التراث العربى بيروت)

तेरे कदमों में जो हूँ गैर का मुंड क्या देखें

कौन नजरों पे यहे देख के तलवा तेरा

(ड़ाईके बप्पिश शरीफ़)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

सिद्दीके अकबर उयातुन्नबी के काईल थे

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! गौर ! अगर उजरते

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोझे जुमुआ दो सो बार दुरेदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआक

सखियेदुना अबू बक सिदीक رضی اللہ تعالیٰ عنہ, रसूलुल्लाह
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को जिन्दा न जानते तो हरगिज ऐसी वसियत
 न इरमाते के रौजअे अकदस के सामने मेरा जनाजा रफ कर
 नबिये रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से ँजात तलज की जाये.
 उरते सखियेदुना अबू बक सिदीक رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने वसियत की
 और सहाजअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ँसे अ-मली जमा पडनाया,
 जिस से साबित होता है के उरते सखियेदुना सिदीके अकबर
 رضی اللہ تعالیٰ عنہ और तमाम सहाजअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का येह
 अकीदा था के मडबूजे परवर्द गार, शाहे आलम मदार, दो आलम
 के मालिको मुप्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आ'दे विसाल भी कब्रे अन्वर
 में जिन्दा व हयात और साहिजे तसरुफात व ँप्तियारात हैं.
 ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

तू जिन्दा है वल्लाह तू जिन्दा है वल्लाह

मेरे यशमे आलम से छुप जाने वाले (हदाईके बख्शिश शरीक)

हयातुल अम्बिया

! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! अताअे रब्बुल अनाम तमाम अम्बियाअे

किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام जिन्दा हैं. युनान्हे “ँबने माजह” की
 हदीसे पाक में है :

إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ
 تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ فَبِئْسَ اللَّهُ
 حَتَّى يُرَزَّقَ .

बेशक अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ने हराम
 किया है जमीन पर के अम्बिया
 (عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) के जिस्मों को
 खराज करे तो अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के
 नबी जिन्दा हैं, रोजी दिये जाते हैं.

(सु-नने ँबने माजह, जि. 2, स. 291, हदीस : 1637)

अेक और हदीसे पाक में है : اَلْأَنْبِيَاءُ أَحْيَاءٌ فِي قُبُورِهِمْ يُصَلُّونَ

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : મુઝ પર દુરુદ શરીફ પढો અલ્લાહ عَلَّوْحُ عَلَّوْحُ તુમ પર રહમત ભેજેગા. (ابن عمر)

યા'ની અમ્બિયા હયાત હૈં ઓર અપની અપની કબ્રોં મેં નમાઝ પઢતે હૈં. (مُسْتَدَّ اَبِي يَعْطٰى ج ٣ ص ٢١٦ حديث ٣٤١٢ دارالکتب العلمیة بیروت)

ગુસ્તાખે રસૂલ સે દૂર રહો

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! રસૂલ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم કે મુ-તઅલ્લિક હર મુસલ્માન કા વોહી અકીદા હોના ઝરૂરી હૈ જો સહાબએ કિરામ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ ઓર અસ્લાફે ઉઝામ اللہُ السَّلَام કા થા, અગર અગર شૈતાન વસ્વસે પૈદા કરને કી કોશિશ કરે ઓર અ-ઝ-મતે વ શાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم મેં તા'ના ઝની કરતે હુએ અક્લી દલાઈલ સે કાઈલ કરને કી નાપાક સમૂય (કોશિશ) કરે તો ઉસ સે અલગ થલગ હો જાઈયે જૈસા કે દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 162 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ, “ઈમાન કી પહયાન” સફહા 58 પર આ'લા હઝરત, ઈમામે અહલે સુન્નત, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અલહાજ અલ હાફિઝ અલ કારી શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن આશિકાને રસૂલ કો તાકીદ કરતે હુએ ફરમાતે હૈં :

“જબ વોહ (યા'ની ગુસ્તાખાને રસૂલ) રસૂલુલ્લાહ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم કી શાન મેં ગુસ્તાખી કરેં અસ્લન (યા'ની બિલકુલ) તુમ્હારે કલબ મેં ઉન (ગુસ્તાખોં) કી અ-ઝ-મત, ઉન કી મહબ્બત કા નામો નિશાન ન રહે ફૌરન ઉન (ગુસ્તાખોં) સે અલગ હો જાઓ, ઉન (લોગોં) કો દૂધ સે મખ્ખી કી તરહ નિકાલ કર ફેંક દો, ઉન (બદ બખ્તોં) કી સૂરત, ઉન કે નામ સે નફરત ખાઓ ફિર ન તુમ અપને રિશ્તે, ઈલાકે, દોસ્તી, ઉલ્ફત કા પાસ કરો ન ઉન

કરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर એક બાર દુરૂદે પાક પઢા અલ્લાહ جَلَّ جَلَّوَجَلَّ ઉસ પર દસ રહમતેં ભેજતા હૈ.

કી મૌલવિયત, મશૈખિયત, બુઝુર્ગી, ફઝીલત કો ખતરે (યા'ની ખાતિર) મેં લાઓ. આખિર યેહ જો કુછ (રિશ્તા વ તઅલ્લુક) થા, મુહમ્મદુર્સૂલુલ્લાહ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم કી ગુલામી કી બિના પર થા, જબ યેહ શખ્સ ઉન હી કી શાન મેં ગુસ્તાખ હુવા ફિર હમેં ઉસ સે ક્યા ઈલાકા (તઅલ્લુક) રહા ?”

(ઈમાન કી પહચાન, સ. 58, મક-ત-બતુલ મદીના બાબુલ મદીના કરાચી)

ઉન્હેં જાના ઉન્હેં માના ના રખા ગૈર સે કામ

اللَّهُ اِنْحَمَدُ મેં દુન્યા સે મુસલમાન ગયા

ઉફ રે મુન્કિર યેહ બઢા જોશે તઅસ્સુબ આખિર

ભીડ મેં હાથ સે કમ બખ્ત કે ઈમાન ગયા

صَلُّوْا عَلٰی الْكَيِّبِ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ (હઠાઈકે બખ્શિશ શરીફ)

ગુસ્તાખે સહાબા સે દૂર રહો

હઝરતે અલ્લામા જલાલુદ્દીન સુયૂતી શાફેઈ رَحْمَةُ اللهِ الْعَوِي “શર્હુસ્સુદૂર” મેં નક્લ કરતે હેં : એક શખ્સ કી મૌત કા વક્ત કરીબ આ ગયા તો ઉસ સે કલિમએ તય્યિબા પઢને કે લિયે કહા ગયા. ઉસ ને જવાબ દિયા કે મેં ઈસ કે પઢને પર કાદિર નહીં હૂં ક્યૂંકે મેં એસે લોગોં કે સાથ નિશસ્તો બરખાસ્ત (યા'ની ઉઠના બૈઠના) રખતા થા જો મુઝે અબૂ બક વ ઉમર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا કે બુરા ભલા કહને કી તલ્કીન કરતે થે.

(شَرْحُ الصُّدُورِ ص ૩૮ مرکز اهل سنت بركات رضا الهند)

કબ્ર મેં શૈખૈન કા વસીલા કામ આ ગયા

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! ઈસ હિકાયત સે શૈખૈને કરીમૈન યા'ની સય્યિદૈના સિદ્દીક વ ફારૂક رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا કી બુલન્દ શાનેં મા'લૂમ હુઈ, જબ ઉન કી તૌહીન કરને વાલોં સે દોસ્તી

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो भेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मगफिरत है (इमाम अहमद)

रबने का येह वबाल के मरते वक्त कलिमा नसीब नहीं हो रहा था तो फिर जो लोग भुद तौहीन करते हैं उन का क्या हाल होगा ! लिहाजा शैबैने करीमैन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के गुस्ताभों से दूर व नुफूर रहना जरूरी है. सिर्फ आशिकाने रसूल व मुहिब्बाने सहाबा व औलिया की सोहबत इप्तिवार कीजिये, इन अजीम हस्तियों की उल्फत का दिया (या'नी यराग) अपने दिल में रोशन कीजिये. और दोनों जहां की तलाशियों के हकदार बनिये. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की महब्बत कब्रों हशर में बेहद कार आमद है युनान्हे अक शप्स का बयान है : मेरे उस्ताज के अक साथी झौत हो गये. उस्ताद साहिब ने उन्हें ज्वाब में देष कर पूछा : مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ يَا'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ-मला किया ? ज्वाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मगफिरत इरमा दी. पूछा : मुन्कर नकीर के साथ कैसी रही ? ज्वाब दिया : उन्होंने ने मुझे बिठा कर जब सुवालात शुरुअ किये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे दिल में डाला और मैं ने इरिश्तों से कह दिया : “सय्यिदैन अबू बक व इरक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के वासिते मुझे छोड दीजिये.” येह सुन कर अक इरिश्ते ने दूसरे से कहा : “ईस ने बडी बुजुर्ग हस्तियों का वसीला पेश किया है लिहाजा ईस को छोड दो.” युनान्हे उन्होंने ने मुझे छोड दिया और तशरीफ ले गये.

(شَرْحُ الصُّدُورِ ص ١٤١)

वासिता दिया जो आप का

मेरे सारे काम हो गये

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيب!

करमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुइटे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिसे उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे (रु)

बरोजे मइशर मठाराते मुनव्वर से बाहर आने का हसीन मन्जर दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 561 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "मद्ज़ज़ाते आ'ला हज़रत" सफ़हा 61 पर ईमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत अलहाज अल हाफ़िज़ अल कारी शाह ईमाम अहमद रज़ा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن बयान इरमाते हैं : अक मर्तबा हुजूरे अकदस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दाहिने (या'नी सीधे) दस्ते अकदस में हज़रते सिदीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का हाथ लिया और बाअें (या'नी उलटे) दस्ते मुबारक में हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का हाथ लिया और इरमाया : هَكَذَا نُبَعَثُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يا'नी हम कियामत के रोज़ यूं ही उठाये जायेंगे . (तिरमिज़ी, जि. 5, स. 378, हदीस : 3689, तारीखे दिमिशक, जि. 21, स. 297)

महबूबे रब्बे अर्श है इस सब्ज कुब्बे में

पहलू में जल्वा गाह अतीको उमर की है (हदाईके बप्तिश शरीफ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

राहे भुदा में आने वाली मुश्किलात का सामना कीजिये

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! हमारे रहबर हज़रते सय्यिदुना सिदीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ यकीनन आशिके अकबर हैं, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने ईशक का ईजहार अमल व किरदार से किया और जब ईशक की राह, पुरखार और सप्त दुश्वार गुजार हुई तब भी आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जज़्बे ईशके शहनशाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सरशार रहे, पतीबे अव्वल का शरफ़ पाते हुअे दीने ईस्लाम की खातिर शहीद मार पडने के बा वुजूद आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के पाअे

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुबदे पाक पढा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ (उस पर दस रहमतें भेजता है।

ईस्तिक्लाल में ज़र्रा भर भी लज्जिश न आई. राखे फुदा عُزَّوَجَلَّ में आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की ईस मुश्किलात भरी उयात में हमारे लिये येह दर्स है के “नेकी की दा’वत” की राहों में ज्वाह कैसे ही मसाईब का सामना हो मगर पीछे हटना कुजा ईस का ज्वाह भी हिल में न आने पाये.

जब आका आभिरि वक्त आये मेरा मेरा सर हो तेरा बाबे करम हो
सदा करता रहूँ सुन्नत की फिदमत मेरा जजबा किसी सूरत न कम हो
(वसाईले बप्तिश)

गमे दुन्या में नहीं गमे मुस्तफ़ा में रोओ

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! आशिके अकबर

की ईशको महब्बत भरी मुबारक जिन्दगी से हमें येह भी दर्स मिलता है के हमारी आहें और सिस्कियां दुन्या की जातिर न हों, महब्बते दुन्या में आंसू न बहें, दुन्यवी ज़ाहो हशमत (या’नी शानो शौकत) के लिये सीने में कसक पैदा न हो बल्के हमारे हिल की हसरत, हुब्बे नबी हो, आंसू यादे मुस्तफ़ा में बहें, दुन्या के दीवाने नहीं बल्के शम्मे रिसालत के परवाने बनें, उन्ही की पसन्द पर अपनी पसन्द कुरबान करें और येही ज्वाहिश हो के काश ! मेरा माल, मेरी जान महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आन पर कुरबान हो जाये, उन से निस्बत रहने वाली हर चीज हिल अजीज हो, जो फुश बप्त ऐसी जिन्दगी गुजारने में काम्याब हो गया तो अल्लाह तबा-र-क व तआला उस के लिये दुन्या मुसज्जर और मज्लूक को उस के ताबेअ कर देगा, आस्मानों में उस के यरये होंगे और सब से बढ कर येह के वोह फुदा व मुस्तफ़ा का महबूब बन जायेगा.

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुवदे पाक पढना लूल गया वोड जन्त का रास्ता लूल गया. (ज़ान)

वोड के उस दर का लुवा भल्के भुदा उस की लुई
वोड के उस दर से किरा अद्लाड उस से किर गया

(डदाईके बभिश शरीक)

लेकिन अइसोस ! सद अइसोस ! आज के मुसल्मानों की
अक्सरियत शाडे अबरार, दो आलम के मालिको मुप्तार
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के उस्वअे ड-सना को अपना मे'यार बनाने के
बज्जअे अग्यार के शिआर और केशन पर निसार डो कर जलीलो
भवार डोती ज़ रडी है.

कौन है तारिके आईने रसूले मुप्तार मस्लडत, वक्त की है किस के अमल का मे'यार
किस की आंभों में समाया है शिआरे अग्यार डो गई किस की निगड तर्जे सलक से बेजार

कलम में सोज नहीं, रूड में अडसास नहीं

कुछ भी पैगामे मुडम्मद का तुम्हें पास नहीं

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

تُؤْتُوا لِي اللهُ أَسْتَغْفِرُالله

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

येड कैसा ईशक और कैसी मडब्भत है ?

भीडे भीडे ईस्लामी भाईयो ! जो लोग अपने वालिदैन
से मडब्भत करते हैं वोड उन का दिल नहीं दुभाते, जिन्हें अपने
बख्ये से मडब्भत डोती है वोड उसे नाराज नहीं डोने डेते, कोई
भी अपने दोस्त को गमजदा डेपना गवारा नहीं करता क्यूंके
जिस से मडब्भत डोती है उसे रन्जुदा नहीं किया जाता मगर
आड ! आज के अकसर मुसल्मान जो के ईशके रसूल के दा'वेदार
हैं मगर उन के काम मडब्भते रब्बुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरदरे पाक न पढा तबकीक वोह बढभन्त हो गया. (अडभर)

शाद करने वाले नहीं, सुनो ! सुनो ! रसूले जी वकार, दो आलम के ताजदार, शह-शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरमाते हैं : “جَعَلْتُ قُرَّةَ عَيْنِي فِي الصَّلَاةِ” है. ” (الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ ج ٢٠ ص ٤٢٠ حديث ١٠١٢) वोह कैसे आशिके रसूल हैं जो के नमाज से जो सुरा कर, नमाज जान बूज कर कजा कर के सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के कलबे पुर अन्वार के लिये तकलीफ व आजार का सभब बनते हैं. येह कौन सी महब्बत और कैसा ईशक है के रसूले रफीउश्शान, मदीने के सुल्तान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ माहे र-मजान के रोजों की ताकीद इरमाओं मगर ખુદ को आशिकाने रसूल में षपाने वाले ईस हुकमे वाला से रू गदानी कर के नाराजिये मुस्तफ़ा का सभब बनें, हुजुरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ नमाजे तरावीह की ताकीद इरमाओं मगर सुस्त व गाइल उम्मतियों से न पढी जाये, पढें ली तो रस्मन माहे र-मजान के इब्तिदाई यन्द दिन और इर येह समज बैठें के पूरे र-मजानुल मुबारक की नमाजे तरावीह अदा हो गई. प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ इरमाओं : “भूछें भूब पस्त (या'नी छोटी) करो और दाढियों को मुआझी दो (या'नी बढाओ) यहुदियों की सी सूरत न बनाओ.” (شرح معانى الآثار للطحاوى ج ٤ ص ٢٨ دارالكتب العلمية بيروت) मगर ईशके रसूल के दा'वेदार मगर इेशन के परस्तार दुश्मनाने सरकार जैसा येहरा बनाओं, क्या येही ईशके रसूल है ?

सरकार का आशिक ली क्या दाढी मुंडाता है ?

क्यूं ईशक का येहरे से ईजहार नहीं होता !

કરમાને મુસ્તક। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुब्द और दस मरतबा शाम दुइदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शक्राअत मिलेगी. (अहमद)

ફિકે મદીના¹ કીજિયે ! યેહ કેસા ઈશક ઓર કેસી મહબ્બત હૈ ? કે મહબૂબે ખુશ ખિસાલ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કે દુશમનોં જૈસી શક્લો સૂરત વ ચાલ ઢાલ અપનાને મેં ફખ્ર મહસૂસ કિયા જાએ !

વઝઅ મેં તુમ હો નસારા તો તમદુન મેં હુનૂદ

યેહ મુસલ્માં હેં જિન્હેં દેખ કે શરમાએ યહૂદ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! મોહસિન વ કરીમ ઓર શફીક વ રહીમ આકા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ તો હમેં હમેશા યાદ ફરમાતે રહે, બલકે દુન્યા મેં તાશરીફ લાતે હી આપ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને સજદા કિયા. ઉસ વક્ત હોંટોં પર યેહ દુઆ જારી થી : رَبِّ هَبْ لِيْ اُمَّتِي : يا'ની પરવર્દ ગાર ! મેરી ઉમ્મત મુઝે હિબા કર દે. (ફતાવા ર-અવિયા, જિ. 30, સ. 717)

પહલે સજદે પે રોઝે અઝલ સે દુરૂદ

યાદગારિયે ઉમ્મત પે લાખોં સલામ (હદાઈકે બખ્શિશ શરીફ)

તા કિયામત “ઉમ્મતી ઉમ્મતી” ફરમાએંગે

મદારિજુન્નુબુવ્વહ મેં હૈ : હઝરતે સચ્ચિદુના કુસમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ વોહ શખ્સ થે જો આપ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآલِهِ وَسَلَّمَ કો કબ્રે અન્વર મેં ઉતારને કે બા'દ સબ સે આખિર મેં બાહર આએ થે, યુનાન્યે ઉન કા બયાન હૈ કે મેં હી આખિરી શખ્સ હૂં જિસ ને હુઝૂરે અન્વર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآલِهِ وَسَلَّمَ કા રૂએ મુનવ્વર, કબ્રે અત્હર મેં દેખા થા, મેં ને દેખા કે સુલ્તાને મદીના صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآલِهِ وَسَلَّمَ કબ્રે અન્વર મેં અપને લબહાએ મુબા-રકા કો જુમ્બિશ ફરમા રહે થે (યા'ની

1 : દા'વતે ઈસ્લામી કે મ-દની માહોલ મેં અપને આ'માલ કા મુહા-સબા કરને કો “ફિકે મદીના” કહતે હેં.

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की।

(अल-नाबि)

मुबारक छोट छिल रहे थे.) मैं ने अपने कानों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे उबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ के दहन (या'नी मुंछ) मुबारक के करीब किया, मैं ने सुना के आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ इरमाते थे "رَبِّ اُمَّتِيْ اُمَّتِيْ" (या'नी परवद गार ! मेरी उम्मत मेरी उम्मत) (مدارجُ النُّبُوَّةِ ج ۲ ص ۴۴۲) नीळ कन्जुल उम्माल जिल्द 7 सफ़हा 178 पर है : इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : "जब मेरी वफ़ात हो जायेगी तो अपनी कब्र में हमेशा पुकारता रहूंगा : يَا رَبِّ اُمَّتِيْ اُمَّتِيْ या'नी औ परवद गार ! मेरी उम्मत मेरी उम्मत. यहां तक के दूसरा सूर ईंका जाओ." (كُنُزُ الْعَمَالِ) मेरे आका आ'ला उजरत अपने लिये इमान की छिफ़ात की धैरात तलब करते हुओ बारगाहे रिसालत में अर्ज करते हैं :

जिन्हें मरकद में ता उशर उम्मती कल कर पुकारोगे

उमें भी याद कर लो उन में सदका अपनी रहमत का

(उदाईके बग्शिश शरीफ़)

मुहद्विसे आ'उमे पाकिस्तान ने इरमाया

मुहद्विसे आ'उमे पाकिस्तान उजरत अल्लामा मौलाना

सरदार अलमद عَالِي رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاِخْد इरमाया करते थे के हुजूरे पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ तो सारी उम्र उमें उम्मती उम्मती कल कर याद इरमाते रहे, कब्रे अन्वर में भी उम्मती उम्मती इरमा रहे हैं और उशर तक इरमाते रहेंगे यहां तक के मलशर के रोज़ भी उम्मती उम्मती इरमाओंगे. उक येह है के अगर सिर्फ़ अक बार भी उम्मती इरमा देते और उम सारी जिन्दगी या नबी या नबी, या रसूलल्लाह, या उबीबल्लाह कलते रहें तब भी उस अक बार उम्मती कलने का उक अदा नहीं हो सकता.

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा (अल-मुस्तफ़ा)

जिन के लब पर रहा “उम्मती उम्मती” याद उन की न भूल औ नियाजी कभी वोह कहे उम्मती तू भी कड या नबी ! मैं हूँ छाजिर तेरी याकरी के लिये

भरोजे क्रियामत फ़िके उम्मत का अन्दाज

हुज़रते एब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है, हुज़ूर शाहे पैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : क्रियामत के दिन तमाम अम्बियाओ किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) सोने के मिम्बरों पर जल्वागर होंगे, मेरा मिम्बर ખाली होगा क्यूंके मैं अपने रब के हुज़ूर ખामोश ખडा होउंगा के कहीं ऐसा न हो अल्लाह मुजे जन्नत में जाने का हुक्म फ़रमा दे और मेरी उम्मत मेरे बा’द परेशान फ़िरती रहे. अल्लाह तआला फ़रमाओगा : औ महबूब ! तेरी उम्मत के बारे में वोही फैसला करूंगा जो तेरी यादत है. मैं अर्ज़ करूंगा : اللَّهُمَّ عَجِّلْ حِسَابَهُمْ या’नी औ अल्लाह ! एन का खिसाब जल्दी ले ले (के मैं एन को साथ ले जाना यादता हूँ) येह मुसल्लसल अर्ज़ करता रहूंगा यहाँ तक के मुजे दोज़्भ में जाने वाले मेरे उम्मतियों की फ़ेहरिस्त दे दी जाओगी (जो जहन्नम में दाखिल हो चुके होंगे उन की शफ़ाअत कर के मैं उन्हें निकालता जाउंगा) यूँ अजाबे एलाही के लिये मेरी उम्मत का कोई फ़र्द न भयेगा.

(كُنُزُ الْعُقَالِ ج ٧ ص ١٤ رقم ٣٩١١١ دارالكتب العلمية بيروت)

अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्ट होगा

रो रो के मुस्तफ़ा ने दरिया बहा दिये हैं

औ आशिकाने रसूल ! उम्मत के गम प्वार आका के कदमों पर निसार हो जाँये और जिन्दगी उन की गुलामी बल्के उन के गुलामों की गुलामी और दा’वते ईस्लामी और ईस के म-दनी काफ़िलों के अन्दर सफ़र में गुज़ार कर भरने के बा’द उन

કરમાને મુસ્તકા صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : મુઝ પર દુરુદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમ્હારે લિયે તહારત હૈ. (૫૧)

કી શફાઅત કે હકદાર હો જાઈયે ઔર અપના મુંહ બરોઝે કિયામત નબિય્યે રહમત, શફીએ ઉમ્મત صلى الله تعالى عليه وآله وسلم કો દિખાને કે કાબિલ બના લીજિયે યા'ની યહૂદો નસારા કી સી શકલો સૂરત બનાની છોડ દીજિયે, અપને ચેહરે પર એક મુઝી દાઢી સજા લીજિયે, ઇંગ્રેઝી બાલોં કે બજાએ ઝુલ્ફેં રખ લીજિયે ઔર નંગે સર ઘૂમને કે બજાએ સજા ઇમામા શરીફ કે ઝરીએ અપના સર “સર સજા” કર લીજિયે. બસ અપને ઝાહિર વ બાતિન પર મ-દની રંગ ચઢા લીજિયે.

રૂ થા કે ઇસ્યાં કી સજા અબ હોગી યા રોઝે જઝા

દી ઉન કી રહમત ને સદા યેહ ભી નહીં વોહ ભી નહીં

મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઇમામે અહલે સુન્નત, વલિય્યે ને'મત, અઝીમુલ બ-ર-કત, અઝીમુલ મર્તબત, પરવાનએ શમ્એ રિસાલત, મુજદિદે દીનો મિલ્લત, હામિય્યે સુન્નત, માહિયે બિદઅત, આલિમે શરીઅત, પીરે તરીકત, બાઈસે ખૈરો બ-ર-કત, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અલહાજ અલ હાફિઝ અલ કારી શાહ ઇમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن હમેં સમઝાતે હુએ ફરમાતે હેં :

જો ન ભૂલા હમ ગરીબોં કો રઝા

યાદ ઉસ કી અપની આદત કીજિયે

કાશ ! હમ પક્કે આશિકે રસૂલ બન જાએ

હઝરતે સચ્ચિદુના સિદીકે અકબર رضى الله تعالى عنه કે કદમોં કી ધૂલ કે સદકે કાશ ! હમ ભી સચ્ચે ઔર પક્કે આશિકે રસૂલ બન જાએ. કાશ ! હમારા ઉઠના બૈઠના, ચલના ફિરના, ખાના પીના, સોના જાગના, લેના દેના, જીના મરના મીઠે મીઠે આકા,

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पडोयता है. (طبرانی)

मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतों के मुताबिक
हो जाये. औ काश !

इना एतना तो हो जागें में तेरी जाते आली में

जो मुज को देख ले उस को तेरा दीदार हो जाये

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! अपने अन्दर एशके हकीकी

की शम्भ रोशन कीजिये, اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ आखिर व बातिन मुनव्वर
हो जायेगा और दुन्या व आभिरत में सुर्भरुई कदम यूमेगी.

ज्वार जहां में कभी हो नहीं सकती वोह कौम

एशक हो जिस का जसूर¹, इकर हो जिस का गयूर

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيِّبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

सिदीकी हजरात के अंगूठे में निशान !

हजराते सय्यिदुना सिदीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की
औलाद को “सिदीकी” बोलते हैं, एन के पाँउ के अंगूठे में आज
भी सांप के काटने का निशान नजर आना मुम्किन है. मगर
द्विषाई न देने पर किसी सिदीकी साहिब की सिदीकियत पर बढ
गुमानी जाईज नहीं के हर अेक में येह अलामत वाजेह नहीं
होती. सगे मदीना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अेक सिदीकी आलिम साहिब से
“अंगूठे का निशान” द्विषाने की दर-ज्वास्त की तो कहा के मेरे
वालिद साहिब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ ने पुरय कर आखिर किया था मगर
अब फिर छुप गया है. मुइस्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजराते
मुइती अहमद यार पान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ “मिरआतुल मनाज्जल” जिल्द
8 सईहा 359 पर इरमाते हैं : “बा’ज सालिहीन को इरमाते सुना

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मर्तबा दुवदे पाक पढा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ (उस पर सो रहमते नाजिल करमाती है. (طبرانی))

गया के जो शैख सिद्दीकी (सय्यिद्दुना सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के शहजादे जो के सहाबी थे उन या'नी) हजरते मुहम्मद बिन अबू बक्र (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) की औलाद से हैं, उन्हें सांप या तो काटता नहीं अगर काटे तो (जहर) असर नहीं करता. (येह) उस लुआब शरीफ़ का असर है (जो के सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सय्यिद्दुना सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के अंगूठे पर गारे सौर में सांप के उसने की जगह लगाया था) और उन की औलाद के पाँउ के अंगूठे में “सियाह तिल” होता है उता के अगर मां बाप दोनों की तरफ़ से शैख सिद्दीकी हो तो दोनों पाँउ के अंगूठे में तिल होगा. मैं ने बहुत (से) सिद्दीकी हजरात के पाँउ के अंगूठे में येह तिल देखे हैं. ग-रजे के येह अज्जब मो'जिजात हैं.” (या'नी सिद्दीकियों को सांप का न काटना, काटे तो जहर का असर न करना और आज तक पाँउ के अंगूठे में तिल का पाया जाना येह सब सरकारे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुबारक लुआब के मो'जिजात हैं)

जईई में येह कुव्वत है जईई¹ को कवी कर दें

सहारा लें जईई अक़्विया² सिद्दीके अकबर का (जौके ना'त)

सिद्दीके अकबर ने म-दनी ऑपरेशन इरमाया

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! अपने दिल में ईशके रसूल की शम्अ जलाने और अपना सीना महब्बते रसूल का मदीना बनाने के लिये दा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल से हर दम वाबस्ता रहिये, اِنَّ سَيِّدَنَا اللهُ عَزَّوَجَلَّ ईस म-दनी माडोल की ब-र-कत से राहे सुन्नत पर चलने की सआदत और ईजाने सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की ब-र-कत नसीब होंगी. सुन्नतों की तरबियत की

करमाने मुस्तक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइद शरीक न पढे तो वोह लोगों में से अस तरीन शायर (अस तरेन शायर)

धातिर हर माह कम अज कम तीन दिन के लिये म-दनी काइले में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों तरे सहर का मा'मूल बनाईये, म-दनी मर्कज के ईनायत इरमूदा नेक बनने के नुस्खे "म-दनी ईन्आमात" के मुताबिक अपनी जिन्दगी के शबो रोज गुजारिये नीज रोजाना रात कम अज कम 12 मिनट **इंके मदीना** कीजिये और उस में म-दनी ईन्आमात का रिसाला पुर इरमा लीजिये إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ दोनों जहानों में बेडा पार होगा. दा'वते ईस्लामी को किस कदर इैजाने सिदीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हासिल है इस का अन्दाजा इस म-दनी बहार से लगाईये युनान्चे अक आशिडे रसूल का बयान अपने अन्दाज व अल्फाज में पेश करने की कोशिश करता हूं : हमारा म-दनी काइला "नाका पारडी" (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) में सुन्नतों की तरबियत के लिये हाजिर हुवा था, म-दनी काइले के अक मुसाफिर के सर में यार छोटी छोटी गांठें हो गई थीं जिन के सबब उन को **आधा सीसी** (या'नी आधे सर) का दर्द हुवा करता था. जब दर्द उठता तो दर्द की तरफ वाले येहरे का हिस्सा सियाह पड जाता और वोह तकलीफ के सबब इस कदर तडपते के देखा न जाता. अक रात इसी तरह वोह दर्द से तडपने लगे, हम ने गोलियां पिला कर उन को सुला दिया. सुब्ह उठे तो हश्शाश बश्शाश थे. उन्हों ने बताया के أَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मुज पर करम हो गया, मेरे प्वाब में सरकारे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मअ यार यार الرِّضْوَانِ करम आलाअे करम इरमाया.

सरे वालीं उन्हे रहमत की अदा लाई है

हाल बिगडा है तो भीमार की बन आई है

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरी जानिब ईशारा

करमाने मुस्तफ़ि صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक भाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरडे पाक न पड़े (फिर)

करते हुअे उठरते सय्यिदुना सिदीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से इरमाया : “ईस का दई अत्म कर दो.” युनान्ये यारे गार व यारे मजार सय्यिदुना सिदीके अकबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मेरा ईस तरह म-दनी ओंपरेशन किया के मेरा सर जोल दिया और मेरे दिमाग में से यार काले दाने निकाले और इरमाया : “बेटा अब तुम्हें कुछ नहीं होगी.” म-दनी बहार बयान करने वाले ईस्लामी भाई का कलना है : वाकेई वोह ईस्लामी भाई बिलकुल तन्दुरुस्त हो युके थे. सइर से वापसी पर जब उन्हों ने दोबारा “येकअप” करवाया तो डोक्टर ने हैरान हो कर कहा : भाई ! कमाल है तुम्हारे दिमाग के यारों दाने गाईब हो युके हैं ! ईस पर उन्हों ने रो रो कर म-दनी काइले में सइर की ब-र-कत और ज्वाब का तजकिरा किया. डोक्टर बहुत मु-तअस्सिर हुवा. उस अस्पताल के डोक्टरों समेत वहां मौजूद 12 अइराद ने 12 दिन के म-दनी काइले में सइर की नियतें लिखवाई और बा’ज डोक्टरों ने अपने येहरे पर हाथों हाथ सरवरे काअेनात صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की महज्जत की निशानी या’नी दाढी मुबारक सजाने की नियत की.

लूटने रहमतें काइले में यलो सीभने सुन्नतें काइले में यलो

हे नबी की नजर काइले वालों पर पाओगे राहतें काइले में यलो

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْرُ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدًا

हम को बू बको उमर से प्यार है اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيَّ وَآلِیَّ وَارْحَمْنِیْ

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! बयान को इप्तिताम की तरफ़ लाते हुअे सुन्नत की इजीलत और यन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं. ताजदारे रिसालत,

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज़ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ करेगे (المسألة ١٧٥)

शह-शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्मे भजमे लिदायत, नोशअे भजमे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महडब्बत की उस ने मुज़ से महडब्बत की और जिस ने मुज़ से महडब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा. (مَشْكَاتُ الْمَصَابِيحِ ج ١ ص ٥٥ حديث ١٧٥)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका

जन्नत में पडोसी मुजे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْرُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

“गेसू रचना नबिय्ये पाक की सुन्नत है” के बाईस डुरइ की निस्बत से जुड्कें और सर के बालों वगैरा के 22 म-दनी इल

(1) पा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मुबारक जुड्कें कभी निस्फ़ (या'नी आधे) कान मुबारक तक तो (2) कभी कान मुबारक की लौ तक और (3) बा'ज अवकात बढ जाती तो मुबारक शानों या'नी कन्धों को जूम जूम कर यूमने लगती (4) (الشمائل المحمدية للترمذی ص ٣٥٤, ٣٥٣) लमें याडिये के भौकअ भ भौकअ तीनों सुन्नतें अदा करें, या'नी कभी आधे कान तक तो कभी पूरे कान तक तो कभी कन्धों तक जुड्कें रभें (5) कन्धों को छूने की लद तक जुड्कें बढाने वाली सुन्नत की अदाअेगी उमूमन नइस पर जियादा शाक (या'नी भारी) होती है मगर जिन्दगी में अेक आध बार तो हर अेक को येह सुन्नत अदा कर डी लेनी याडिये, अलबत्ता येह भयाल रचना जरूरी है के बाल कन्धों से नीये न होने पाअें, पानी से अख़री तरह भीग जाने के बा'द जुड्कें की दराजी (या'नी लम्बाई) भूभ नुमायां हो जाती है लिहाजा जिन दिनों बढाअें उन दिनों गुस्ल के बा'द कंधी कर के गौर से देभ लिया करें के बाल कहीं कन्धों से

فرمانه مستحکم: صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم: من یر دبرہ شریک یدہ اذلالہ عَزَّوَجَلَّ توم पर रहमत भेजेगा. (अनसरी)

नीचे तो नहीं जा रहे (6) मेरे आका आ'ला उजरत عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى इरमाते हैं : औरतों की तरह कन्धों से नीचे बाल रभना मर्द के लिये हराम है (तस्हीलन इतावा र-अविध्या, जि. 21, स. 600) (7) सदरुशरीअह, अदरुतरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى इरमाते हैं : मर्द को येह जा'ज नहीं के औरतों की तरह बाल बढाये, आ'ज सूफी बनने वाले लम्बी लम्बी लटें बढा लेते हैं जो उन के सीने पर सांप की तरह लहराती हैं और आ'ज योटियां गूंधते हैं या जूडे (या'नी औरतों की तरह बाल ँकड़े कर के गुद्दी की तरह गांठ) बना लेते हैं येह सब ना जा'ज काम और खिलाफे शर-अ हैं. तसव्वुफ् बालों के बढाने और रंगे हुअे कपडे पहनने का नाम नहीं बल्के हुजुरे अकदस صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم की पूरी पैरवी करने और ख्वालिशाते नरुस को मिटाने का नाम है. (बहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 230) (8) औरत का सर मुंडवाना हराम है. (खुलासा अज इतावा र-अविध्या, जि. 22, स. 664) (9) औरत को सर के बाल कटवाने जैसा के ँस जमाने में नसरानी औरतों ने कटवाने शुअर कर दिये ना जा'ज व गुनाह है और ँस पर ला'नत आ'ई. शोहर ने अैसा करने को कहा जब त्मी येही हुकम है के औरत अैसा करने में गुनहगार होगी क्यूंके शरीअत की ना इरमानी करने में किसी का (या'नी मां बाप या शोहर वगैरा का) कहना नहीं माना जायेगा. (बहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 231) (10) आ'ज लोग सीधी या उलटी जानिब मांग निकालते हैं येह सुन्नत के खिलाफ है (11) सुन्नत येह है के अगर सर पर बाल हों तो बीच में मांग निकाली जाये (अैजान) (12) (सरकारे मदीना صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم से) बिगैर उज कत्मी सर मुंडवाना साबित नहीं (इतावा र-अविध्या, जि. 22, स. 690)

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रडमतें भेजता है.

(13) आज कल केंची या मशीन के जरीअे बालों को मप्सूस तर्ज पर काट कर कहीं भडे तो कहीं छोटे कर दिये जाते हैं, अैसे बाल रभना सुन्नत नहीं (14) इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “जिस के बाल हों वोह उन का ईकराम करे.” (सु-नने अबू दावूद, rs. 4, स. 103, हदीस : 4163) या’नी उन को धोअे, तेल लगाअे और कंधा करे (15) हजरते सय्यिदुना ईब्राहीम जलीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَامُ ने सभ से पहले मेहमानों की जियाइत की और सभ से पहले भतना किया और सभ से पहले मूँछ के बाल तराशे और सभ से पहले सईद बाल देभा. अर्ज की : अै रभ ! येह क्या है ? अल्लाह उँऊ ने इरमाया : “अै ईब्राहीम ! येह वकार है.” अर्ज की : अै मेरे रभ ! मेरा वकार जियादा कर. (मुअत्ता, जि. 2, स. 415, हदीस : 1756) (16) दा’वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 312 सईहात पर मुशतमिल किताब, “अदारे शरीअत” हिस्सा 16 सईहा 224 पर है : महबूअे रब्बुल ईबाद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ईअत बुन्याद है : “जो शप्स कस्टन (या’नी जान बूज कर) सईद बाल उभाडेगा कियामत के दिन वोह नेजा हो जाअेगा जिस से उस को त्मौका जाअेगा.” (17) (كَتْرُ الْعَمَالِ ج ٦ ص ٢٨١ رقم ١٧٢٧٦) बुय्यी (या’नी वोह यन्द बाल जो नीये के होंट और ठोडी के बीच में होते हैं उस) के अगल बगल (या’नी आस पास) के बाल मुंडाना या उभेडना बिदअत है. (इतावा आलमगीरी, जि. 5, स. 358) (18) गरदन के बाल मूंडना मकडूह है. (अैजन, स. 357) या’नी जब सर के बाल न मुंडाअें सिई गरदन ही के मुंडाअें जैसा के अहुत से लोग भत बनवाने में गरदन के बाल त्मी मुंडाते हैं और अगर

करमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरेद पाक पढे बेशक तुम्हारा मुज पर दुरेद पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़क़िरत है. (अहमद)

पूरे सर के बाल मुंडा दिये तो ईस के साथ गरदन के बाल भी मुंडा दिये जाओं. (बहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 230) (19) यार यीजों के मु-तअद्लिक हुकम येह है के दफ़्न कर दी जाओं, बाल, नाभुन, हैज का लत्ता (या'नी वोह कपडा जिस से औरत हैज का पून साफ़ करे), पून. (अज्ज, स. 231, आलमगीरी, जि. 5, स. 358) (20) मर्द को दाढी या सर के सफ़ेद बालों को सुर्ष या जर्द रंग कर देना मुस्तहब है, ईस के लिये मंढी लगाई जा सकती है (21) दाढी या सर में मंढी लगा कर सोना नहीं याहिये. अक उकीम के बकौल ईस तरह मंढी लगा कर सो जाने से सर वगैरा की गर्मी आंभों में उतर आती है जो बीनाई के लिये मुजिर या'नी नुकसान देह है. उकीम की बात की तौसीक यूं हुई के अक बार सगे मदीना عَنَّا के पास अक नाबीना शप्स आया और उस ने बताया के मैं पैदाईशी अन्हा नहीं हूं, अफ़सोस के सर में मंढी लगा कर सो गया जब बेदार हुवा तो मेरी आंभों का नूर जा युका था ! (22) मंढी लगाने वाले की मूंछ, नियले डोंट और दाढी के पत के कनारे के बालों की सफ़ेदी यन्द ही दिनों में जाहिर होने लगती है जो के देभने में त्वली मा'लूम नहीं होती लिहाजा अगर बार बार सारी दाढी नहीं भी रंग सकते तो कोशिश कर के हर यार दिन के आ'द कम अज कम ईन जगहों पर जहां जहां सफ़ेदी नजर आती हो थोड़ी थोड़ी मंढी लगा लेनी याहिये.

उजारों सुन्नतें सीभने के लिये मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ दौ कुतुब (1) 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत हिस्सा 16 और (2) 120 सफ़हात की किताब “सुन्नतें और आदाब” उदिय्यतन हासिल कीजिये और पढिये. सुन्नतों की तरबिय्यत का अक बेहतरीन जरीआ दा'वते ईस्लामी के म-दनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है.

लूटने रडमतें काफ़िले में यलो

सीभने सुन्नतें काफ़िले में यलो

होगी डल मुश्किलें काफ़िले में यलो

अत्म हों शामतें काफ़िले में यलो

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मन्कबते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर رضى الله تعالى عنه

यकीनन मम्बअे षौडे षुदा सिद्दीके अकबर हँ
 बिला शक पैकरे सभ्रो रिजा सिद्दीके अकबर हँ
 निहायत मुत्तकी व पारसा सिद्दीके अकबर हँ
 ज़ो यारे गारे मडबूबे षुदा सिद्दीके अकबर हँ
 तबीबे डर मरीजे ला दवा सिद्दीके अकबर हँ
 अमीरुल मुअमिनी हँ आप ँमा मुस्लिमी हँ आप
 सली अस्लाब से बढ कर मुकर्रअ जात है उन की
 उमर से भी वोड अङ्गल हँ वोड उस्मां से भी आ'ला हँ
 ँमामे अडमदो मालिक, ँमामे बू डनीङा और
 तमामी औलियाउल्लाड के सरदार हँ ज़ो उस
 सली उ-लमाअे उम्मत के ँमामो पेशवा हँ आप
 षुदाअे पाक की रडमत से ँन्सानों में डर ँक से
 डलाकत भैज तुग्यानी डो या डों मौजें तूङानी
 डटक सक्ते नहीं डम अपनी मन्जिल ठोकरों में है
 गुनाडों के मरज ने नीम ज़ां है कर दिया मुज को
 न डबराओ गुनडगारो तुम्हारे डशर में डामी

डकीकी आशिडे भैरुल वरा सिद्दीके अकबर हँ
 यकीनन मम्बअे सिदको वङा सिद्दीके अकबर हँ
 तकी हँ बडके शाडे अडिया सिद्दीके अकबर हँ
 वोडी यारे मजारे मुस्तङा सिद्दीके अकबर हँ
 गरीबों बे कसों का आसरा सिद्दीके अकबर हँ
 नबी ने जन्तली जिन को कडा सिद्दीके अकबर हँ
 रङीके सरवरे अजों समा सिद्दीके अकबर हँ
 यकीनन पेशवाअे मुर्तजा सिद्दीके अकबर हँ
 ँमामे शाङे ँके पेशवा सिद्दीके अकबर हँ
 डमारे गौस के भी पेशवा सिद्दीके अकबर हँ
 बिला शक पेशवाअे अस्त्रिया सिद्दीके अकबर हँ
 कुंजतर बा'द अज कुल अम्बिया सिद्दीके अकबर हँ
 क्युं डूबे अपना बेडा ना षुदा सिद्दीके अकबर हँ
 नबी का है करम और रडनुमा सिद्दीके अकबर हँ
 तबीब अब बस मेरे तो आप या सिद्दीके अकबर हँ
 मुडिबे शाङेअे रोजे जजा सिद्दीके अकबर हँ

न डर अत्तार आङत से षुदा की षास रडमत से
 नबी वाली तेरे, मुश्किल कुशा सिद्दीके अकबर हँ

येड रिसाला (आशिडे अकबर)

शैभे तरीकत, अमीरे अडले सुन्नत, बानिये द्वा'वते ँस्लामी डजरत अल्लामा मौलाना
 अबू बिलाल मुडम्मद ँल्यास अत्तार काटिरी र-जवी जियाँ رحمة الله عليه ने उर्दू ज़बान में
 तडरीर डरमाया है. मजलिसे तराजिम (द्वा'वते ँस्लामी) ने ँस रिसाले को गुजराती
 रस्मुल षत में मक-त-बतुल मदीना से शाअेअ करवाया है.

ँस में अगर किसी जगड कमी बेशी या ग-लती पाअें तो मजलिसे तराजिम को
 (ब डरीअे मक्तूब, ँ-मेँल या SMS) मुत्तलअ डरमा कर सवाब कमाँये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (द्वा'वते ँस्लामी)

: मक-त-बतुल मदीना :

अडमद आबाद.

only sms : MO. 9377111292 ,

e mail : makatabahind@gmail.com